पुस्तकों की सूची

1. सतगुरू ताराचन्द जी महाराज के 101 अनमोल रत्न
2. रूहानी पत्र व सतगुरू आदेश
3. आत्मिक सफर और रूहानी मंजिलें
4. मुर्शिद-ज्योति (द्विमासिक हिन्दी पत्रिका सदस्यता शुल्कः 70/- रूपये दो वर्ष के लिये)
5. संत अवतरण

संत अवतरण

राधास्वामी सत्संग
ताराधाम

सर्वाधिकार सुरक्षित
अक्टूबर २००२

डा० हरिओम

संत अवतरण

राधास्वामी सत्संग
ताराधाम, कैथल

विषय - वस्तु

- मनुष्य की विराट ब्रह्माण्ड में स्थिति
- मनुष्य का बढ़ता भय और धर्म का महत्व
- हिन्दू धर्म : अवसर और चुनौतियां
- सद्गुरू की आध्यात्मिक महता
- भागीरथ की तपस्या और संकल्प
- विचार की ताकत और महाभारत का युद्ध
- क्या दुःख मिटाने और मुक्ति का मार्ग अलग-अलग हैं
- शब्द और शब्द-धुन में अन्तर
- नाद समाधि और सुरत-शब्द योग
- पूर्ण सद्गुरू का आन्तरिक स्वरूप

(यह पुस्तक डा० हरिओम, राधास्वामी सत्संग ताराधाम, कैथल के सत्संगों पर आधारित है)

राधास्वामी।

राधास्वामी दयाल की दया राधास्वामी सहाय।।

राधास्वामी।।।

समर्पित

राधास्वामी दयाल परम् संत

सद्गुरू ताराचन्द जी महाराज

के चरण कमलों में।

मनुष्य की ब्रह्माण्ड में स्थिति और मुक्ति

राधास्वामी दयाल परम् संत ताराचन्द जी महाराज गुरू नानक का हवाला देकर फरमाते थे :

नानक नन्हा होय रहो जैसे नन्ही दूब।
ओर घास जल जाएंगे दूब रहेगी खूब।।

अर्थात् मनुष्य को कभी भी अहंकार नहीं करना चाहिए। आज तक जिसने भी अहंकार किया है। काल ने उसी का मर्दन किया है।

मनुष्य किस चीज के लिए अहंकार कर सकता है। उसकी इस ब्रह्माण्ड में स्थिति ही क्या है। सारे ब्रह्माण्ड को यदि छोटा करके मनुष्य के सामने रख दिया जाये तो वह इन आंखों से पथ्वी को देख भी नहीं सकता है। पथ्वी का आकार इतना सूक्ष्म हो जाएगा जितना कि मिट्टी के अन्दर एक सूक्ष्मजीवी का। ऐसा आकार जिसे बहुत बड़ी दूरबीन के द्वारा ही देखा जा सकता है। दूसरे अर्थो में ऐसा कहा जा सकता है कि पथ्वी की स्थिति इस ब्रह्माण्ड में इस तरह है जिस प्रकार एक बड़े रेगिस्तान में रेत का एक कण। ऐसी परिस्थिति में इस ब्रह्माण्ड में मनुष्य की क्या हैसियत हो सकती है इसका अन्दाजा आसानी से लगाया जा सकता है। परमात्मा और परमात्मा की इस सष्टि में फिर एक व्यक्ति या पथ्वी की सारी मानव जाति के अहंकार का क्या अर्थ हो सकता है? यह भी स्पष्ट है। किसी बड़े देश का राजा सारे संसार को अपने अधीन कर लेता है। उस ईश्वर के सामने उसकी क्या बिसात है। कोई धर्म यदि सारे संसार को अपने कब्जे में ले लेता है तो उसका भी क्या अर्थ है। कोई बड़ा महात्मा यदि यह दावा करता है कि सम्पूर्ण संसार के लोग उसके अनुयायी हो गए हैं तो सम्पूर्ण सष्टि के स्वामी के सामने यह भी अर्थशून्य प्रतीत होता है क्योंकि सारी पथ्वी ही सूर्य के अन्दर घटने वाली घटनाओं और उसकी गति की मोहताज है। सूर्य के अन्दर होने वाली छोटी सी हलचल पथ्वी को

पल के अन्दर विनाश की ओर धकेल सकती है फिर मानव की उसके सामने क्या अहमियत है।

जब प्रलय या महाप्रलय का समय आता है या कह सकते हैं कि जब ब्रह्माण्ड की उर्जा का सिकुड़ने का समय आता है तो सारी पथ्वी या ब्रह्माण्ड अंधकार में जाकर छिप जाते हैं। क्या इसे रोका जा सकता है? कदापि नहीं क्योंकि ऐसी स्थिति या मांग
केवल इस पथ्वी से नहीं उठती है बल्कि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की उर्जा जिसे विश्वकर्म भी कह सकते हैं से यह कार्य आगे बढ़ता है। उस विश्वकर्म का हम और सम्पूर्ण पथ्वी केवल एक अंश मात्र हैं। फिर कैसा अहंकार और कैसी स्वंय के विस्तार की इच्छा, यह सब उसी व्यक्तिगत अहंकार की अभिव्यक्ति है। सष्टि के हर कण के अंदर सष्टि के स्वामी या सर्व-समर्थ होने का स्वतः गुण मौजूद है इसीलिए हर व्यक्ति मुक्ति की कामना कर रहा है, सर्व-समर्थ का हिस्सा बनने का प्रयत्न कर रहा है।

अनमोल रत्न

- *माता की सेवा करने से पथ्वी तथा पिता की सेवा करने से आकाश के समस्त देवी-देवता प्रसन्न हो जाते हैं।*
- *यदि बुढ़ापे का सुख चाहिए और औलाद लायक बनानी हो तो दो वक्त परमात्मा का भजन करो।*
- *सत्संगी वही है जो दूसरों की निंदा और ईर्ष्या नहीं करता। दूसरों की निंदा करने से उनके कर्मो का भार अपने सिर आ जाता है।*
- *पहले अपने घरों का व्यवहार ठीक करो। यह राधास्वामी मत की पहली सीढ़ी और नीवं है।*

- परम संत ताराचन्द जी महाराज

मनुष्य का बढ़ता भय और धर्म का महत्व

राधास्वामी दयाल परम संत ताराचन्द जी महाराज कहते थे कि दुनियां के लोग इतने भयभीत हैं कि भेड़ की तरह बिदकते और भागते हैं, केवल संत ऐसे होते हैं जो सच्चाई के रास्ते पर चलने का प्रयत्न करते हैं तथा शेर की तरह गरजते और गाजते हैं जिसके लिए उन्हें चाहे कष्ट ही क्यों न सहने पड़ें।

गौर से देखा जाए तो आज का हर व्यक्ति भयभीत है। वह आतंक मचा रहा है तो भयभीत है, वह भ्रष्टाचार कर रहा है तो भयभीत है, वह दूसरों को सता रहा है तो भयभीत है, वह उन्नति कर रहा है तो भयभीत है। वह स्वयं का जितना भी प्रचार व विस्तार कर रहा है उतना ही भयभीत होता जा रहा है। वह सफलता की जितनी भी ऊंचाई चढ़ता जा रहा है, उस ऊंचाई से गिरने का भय भी उसका उतना ही बढ़ता जा रहा है। जो उसके पास नहीं है उसे पाने की बेचैनी और जो उसके पास है उसे खोने का डर उसे हर वक्त सता रहा है।

कहने का अर्थ यह है कि मनुष्य मानसिक रूप से कमजोर होता जा रहा है। अन्दर से भयभीत होता जा रहा है। इस भय से वह दिन के समय भी भयभीत है और रात की नींद में भी बेचैन है। अनजानी मंजिल के आशावाद ने बालू के रेत पर सपनों का महल खड़ा कर दिया है और इस सपनों के महल की दिवारों को ढहने से बचाने के लिए वह दिन-रात भाग रहा है। लहू-लुहान होने के लिए तैयार है लेकिन इस दौड़ से स्वयं को अलग करने के लिए तैयार नहीं है। तैयार भी कैसे हो क्योंकि सारा ब्रह्माण्ड ही भाग रहा है। पथ्वी भाग रही है, सूर्य भाग रहा है, सितारे और आकाश गंगाएं भाग रही हैं। क्या फिर भी कोई संभावना बच गई है कि जिससे वह इस आत्मघाती दौड़ से स्वयं को अलग कर सके? साक्षी होकर इस दौड़ को केवल देख सके और अपनी आत्मा को घायल होने से बचा

सके? समानांतर दौड़ से बच सके जहां उसके आपस में भिड़ने के खतरे बढ़ गए हैं, और वह साक्षी होकर अपने लम्बवत विकास की ओर ध्यान दे सके। वह सपनों में सूर्य और चांद को देख सके। आकाश के सितारों और आकाश गंगाओं का साक्षात्कार कर सके।

यदि मनुष्य समानान्तर ही दौड़ता रहेगा तो उसकी दष्टि छोटी होती चलेगी। अगले मोड़ पर अचानक क्या आने वाला है, उसकी दष्टि देख न सकेगी और उसकी टक्कर होनी निश्चित हो जाएगी। जितनी रफतार बढ़ेगी उतनी ही अधिक दुर्घटनाएं और उतना ही बड़ा विस्फोट।

जितनी अधिक रफतार बढ़ती चली जाएगी, मनुष्य के दिल की धड़कन भी बढ़ती ही जाएगी। ऐसी अवस्था में मनुष्य किसी ऐसे आश्रय की तलाश करता है जहां पल दो पल के लिए वह शांति में बैठ सके और उसकी थकान मिट सके। बालू के रेत पर उसके सपनों का महल सुरक्षित रह सके और उसके व्यापार को कोई आंच न आए। इस पल दो पल के समय में वह धन-दौलत का दिल खोलकर दान भी करता है ताकि भ्रष्ट तरीके से कमाई गई दौलत में से अंशमात्र दान करके अपनी दौलत, अपने अम्पायर को पाक व पवित्र होने का प्रमाण पत्र दिला सके। ऐसे प्रमाण पत्र देने के लिये जगह-जगह स्कूल खोल दिए गए हैं। जब बिमार और घायल लोगों की कतारें लग गई हैं तो डाक्टरों की संख्या का बढ़ना भी स्वाभाविक है जो बिमार की क्षमता को देखकर उतना ही महंगा इंजेक्शन लगा देते हैं। ये स्कूल आश्रम, चर्च, मंदिर, मस्जिद, गुरूद्वारे आदि नामें से जाने जाते हैं जहां धड़ल्ले से ऐसे प्रमाण पत्र बांटने का व्यापार किया जाता है। कुछ स्थानों पर पल दो पल की इस शांति के लिए फीस भी लगा दी गई है। परमात्मा के नाम पर खोले गए ये स्कूल हमारे भयभीत होने के कारण ही उन्नति के शिखर पर चढ़ गए हैं। आम आदमी की तरह ये भी भयभीत हैं क्योंकि इन्होंने भी धन-दौलत के अम्बार लगा लिए हैं। हर प्रकार के भोग का केन्द्र बन गए हैं। यहां पर समाज विरोधी तत्व खुलकर आश्रय पाते हैं।

इस भय के कारण पूजा के स्थानों की संख्या तो बढ़ ही गई है इसके साथ-साथ देवी-देवताओं की सूची में भी विस्तार आ गया है। हर रोज नए देवी-देवता प्रकट होने लगे हैं। ऋग्वेद को देवता पैदा करने का कारखाना कहा गया है लेकिन अब तो इनकी संख्या आश्चर्यजनक तरीके से बढ़ रही है।

मनुष्य अंदर से विभाजित है इसलिए उसने जगह-जगह अपनी आस्था के केन्द्र बना लिए हैं। एक विभाजित व्यक्ति कभी भी संकल्पशील नहीं हो सकता है, उसका आत्म-विश्वास कभी भी मजबूत नहीं हो सकता है। हिन्दू समाज हमेशा ही इस विभाजन के कारण पिछड़ता रहा है। वह स्वयं की ताकत को स्वयं ही काटता रहा है। यही कारण है कि इतना ऊंचा उपनिषद् और धार्मिक ज्ञान होने के बावजूद भी यह कौम संसार के एक कोने में सिमट कर रह गई है। जो भी कौम एक इष्ट को मानकर चली है संसार में उसी का वर्चस्व कायम हुआ है, उसी का विस्तार हुआ है। ज्ञान की ऊंचाई और धार्मिक स्वतंत्रता अधिक होने के कारण हिन्दू धर्म में आत्मिक उन्नति की संभावना बेजोड़ है लेकिन आपसी धार्मिक विभाजन के कारण हमेशा ही इस धर्म को अपना अस्तित्व बचाने के लिए लड़ाई लड़नी पड़ी है। यदि यह धर्म अपने ज्ञान की ऊंचाई को कायम रख सका तो संसार का मार्ग दर्शन भी कर सकता है लेकिन यदि यह ज्ञान कमजोर हुआ और इस ज्ञान के स्थान पर धार्मिक कट्टरवाद व साम्प्रदायिकता ने जोर पकड़ा तो उसी दिन यहूदी धर्म की तरह इस धर्म को भी अपने अस्तित्व को बचाने के लिए प्रयत्नशील होना पड़ेगा, हथियार उठाकर स्वयं की रक्षा करने के लिए मजबूर होना पड़ेगा जो संभवतः इस धर्म और सम्पूर्ण मानवता के लिए अपूर्व हानि होगी।

अतः मनुष्य को स्वयं के अन्दर मजबूत होने के लिए किसी भी प्रकार के मानसिक विभाजन से बचना होगा। यदि वह किसी भी प्रकार की सफलता की सीढ़ी चढ़ना चाहता है चाहे वह सांसारिक है या आत्मिक, उसे

एक ही इष्ट अर्थात् अपनी ही आत्मा को इष्ट चुनना होगा जो कण-कण में मौजूद है और सर्वसमर्थ का अंश है। उसे देवी-देवताओं, अवतारों और पैगम्बरों के काल्पनिक मायाजाल से बाहर निकलना होगा जो मात्र मन का एक भ्रम है, जिनके नाम पर उसे लगातार ठगा जा रहा है। किसी भी कार्य को आरम्भ करने के लिए एक हिन्दू के लिए गणेश की पूजा आवश्यक है लेकिन एक ईसाई और मुसलमान के लिए गणेश देवता का कोई भी अस्तित्व नहीं है। गणेश पूजन न होने की वजय से उनके कार्य में कोई रूकावट नहीं है बल्कि आज के संसार में सबसे अधिक प्रचार व प्रसार इन्हीं धर्मो का है। गणेश या हमारा कोई भी देवी-देवता उन लोगों के कार्य क्यों नहीं बिगाड़ता है? अतः हमें व्यक्तिगत, राष्ट्रीय या अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विकास और मानवीय सुरक्षा के लिए एक ही आत्मिक इष्ट को अपनाना होगा जो अपने अतिश्रेष्ठ रूप में निराकार हैं, निर्गुण हैं। कोई भी आकार या रूप मात्र उसकी छाया है। कोई भी धर्मशास्त्र या पूजा-स्थल उसका झूठा और छल से भरा प्रतिबिम्ब है। कोई भी अवतार या पैगंबर केवल समय की एक आवश्यकता है मंजिल नहीं।

अनमोल रत्न

- *कपड़े रंगने से मुक्ति नहीं होती। जटा या दाढ़ी बढ़ाने से मुक्ति नहीं होती। मुक्ति होती है शुद्ध विचारों से, शुद्ध कमाई का अन्न खाने से।*
- *जब कोई कष्ट आए तो दान और ध्यान करने बोल देने . चाहिए।*
- *बुढ़ापे में भी ब्रह्मचर्य का पालन आदमी को तैरा देता है। केवल तन से ही नहीं, बल्कि मन से ब्रह्मचर्य का पालन होना चाहिये।*

- परम संत ताराचन्द जी महाराज

संत का अवतरण

प्रेमियों, सत्संगियो, माताओं और बहनों जितनी देर सत्संग होता रहे प्रेम से सुनते रहना। किसी भाई के कोई प्रश्न उठे तो बीच में मत बोलना, बाद में मेरे से बात कर लेना क्योंकि सत्संग किसी एक आदमी के लिए नहीं, सबके लिए किया जा रहा है। यहाँ जितने जीव जितने हँस आज इकट्ठे हो रहे हैं ये मालिक के बड़े स्तम्भ हैं, बड़े प्यारे हैं मालिक के सारे ही, सारी रात शब्दवाणी होती रही। मैं तो सोच रहा था कि एक शब्दी भी आ गया तो बहुत बड़ी बात होगी पर मालिक की कुछ ओर ही मौज हो गई यहाँ। सारी रात में एक मिन्ट भी शब्द बाणी बन्द नहीं हुई। इतने शब्दी आए हुए हैं और बहनें भी सारी रात शब्द गाती रही। इतना प्यार उमड़ कर आया है कि मैं वर्णन नहीं कर सकता। मेरे दाता, मेरे बादशाह, पता नहीं कौन सी मौज हुई है ये तो वही जानें, हम तो उनके पैंदे हैं जहाँ उठा कर रख देंगे वहीं रखे रहेंगे। जो खेल खेलेंगे खेलते रहेंगे हमें तो उस खेल का भी नहीं पता। उनके चरखे हैं जैसे चलाएँगे वैसे चलना पड़ेगा, हमारे वश की बात भी नहीं है। ऐसे-ऐसे मालिक के प्यारे आए हुए हैं कि एक-एक महीने का मौन किया हुआ है उन्होंने। एक-एक मेरी माता ऐसी आई हुई है कि उन्होंने अन्न छोड़ रखा है। इसलिए छोड़ रखा है कि हमारे पुत्र का ये जो मौन है, ये शुरूआत है ये सफल हो जाए। ये दाता का काम है ये कामयाबी से शुरू हो। और मेरे बादशाह की इतनी भारी दया रही कि उसमें कोई रूकावट भी नहीं आई।

सत्संगियो, ऐसा काम शुरू होने में बहुत रूकावट आती है मेरे दाता की कहानी बताती है इस बात को। पर यहाँ पता नहीं दाता की क्या मौज है, मेरे कुछ विचार ऐसे दे दिए मालिक ने शुरू से ही कि अगर इस काम में रूकावट आ गई तो मैं उसे मौज नहीं मानता। मेरे बादशाह तो मूल पाड़ने आए थे। ऐसे-ऐसे लोगों में जान डालने आए थे - लोहे, पत्थरों में, झाड़ों में, हम झाड़ ही थे। पर अब पता नहीं क्या मौज है दाता की,

कुछ ऐसा सपना दिखाया शुरू से कि अगर कोई रूकावट आती है तो मैं मौज नहीं मानता। मेरा ख्याल बना दिया मालिक ने। एक बार एक छोटी सी रूकावट बीच में आई थी। मैं हिसार गया हुआ था किसी भाई ने रूकावट डालने की कोशिश की थी तो मैंने फैसला कर लिया कि दाता मेरे को रूकावट सहन नही होगी, मैंने भाईयों को कह दिया कि समझ लो सत्संग छः महीने पीछे हट गया। पर मेरे बादशाह की कुछ ऐसी दया हुई कि वो रूकावट डालने वाले सुबह ही आ लिए कि आप हौंसले से आगे बढ़ो हम आपके साथ हैं। मेरा दिल खुल गया, हौंसला बढ़ गया। मैं जबसे दाता के चरणों में गया हूँ कोई छोटी सी भी रूकावट नहीं आई, ना अन्दर की ना बाहर की, क्या पूछोगे दाता दयाल की दया को, मैं वर्णन नहीं कर सकता। इस जिन्दगी में मेरे से उनका कर्ज नहीं उतर सकता, सच बताता हूँ आप लोगों को। जिस भी सत्संगी के सिर पर हाथ रख देते थे जो भाव से जाता था उसका काम बन जाता था। ऐसा कोई भी भाई नहीं मिलेगा जो पूरे भाव से उनके चरणों में गया हो ओर मालिक ने उसके सिर पर अपना हाथ रख दिया हो और उसका रास्ता न खुला हो अन्तर का, तो इस बात का मैं जमानती हूँ। मैं तो अपने आसपास के आदमियों की बात बता सकता हूँ आपको। मेरे परिवार के और बिमल के परिवार के कई आदमी उनके चरणों में गए। दो तीन आदमियों को छोड़कर बाकी सभी प्रकाश में आ गए या रहने लग रहे हैं। मेरे ऊपर मालिक की कुछ ऐसी दया थी कि मेरे चारों तरफ मालिक ने प्रकाश का घेरा रखा है। मेरे को अन्धकार के दर्शन नहीं हुए मेरे बादशाह की दया से। इस स्वाद को एक बार चख लोगे तो फिर छूटने में नहीं आएगा, ये वो स्वाद है, ये हरिरस वो चीज है। शराब का नशा तो चीज ही क्या है इसके आगे। ये तो पल में खत्म हो जाते हैं। क्या नशा है ये --

''बाबर प्याला शराब का उतर जाए प्रभात''
नानक खव्वारी नाम की चढ़ी रहै दिन रात।।

ये तो ऐसा नशा है जो चढ़ जाए तो उतरने में नहीं आता। नाम चीज ही ऐसी है। मेरे बादशाह वो चोला लेकर आए थे, युग पुरूष थे, आगे जाकर लोगों को इस बात का ज्ञान होगा। कब पता चलता है महात्मा का? जब चोला छोड़कर चला जाता है। इतने तक नहीं पता लगता। उनकी जीवनी ही ऐसी होती है कि एक-एक कदम की उनकी कहानी सुनते हो तो दिल को पकड़ कर बैठ जाती है। दिल को पकड़कर अन्दर खींच ले जाती है। युगों-युगों तक उनका बीज पड़ता रहता है आदमियों में। उनकी जीवनी ही ऐसी होती है कि वे जन्म लेने में भी राज लेकर आते हैं, चोला छोड़ने में भी राज लेकर आते हैं। हमारी समझ में ये बातें नहीं आएँगी।

इतने प्रतापी होते हैं कि संत सतगुरू का गुणगान तो सारी जिन्दगी भी नहीं किया जा सकता। त्याग लेकर आते हैं ये, प्यार लेकर आते हैं, ध्यान लेकर आते हैं। जहाँ ये तीन चीजें मिल जाएँगी, तीन चीजों का मिलाप हो जाएगा, वह चीज सारी जिन्दगी खत्म होने में नहीं आएगी - सारी दुनिया खाती रहे उसके फल को और बादशाह की जीवनी ऐसी ही थी कि वर्णन में नहीं आ सकती। त्याग का एक छोटा सा उदाहरण तो मैं आपको देकर बताता हूँ। महाराजा अग्रसैन हुए हैं। राजा थे, गहस्थी में थे। इससे आप लोगों को गहस्थी की ऊँचाई का भी पता चल जाएगा कि घर में रहकर ये काम करते हैं तो क्या बनता है। महाराज अग्रसैन बड़े प्रतापी राजा थे, क्षत्रिय थे। उन्होंने यज्ञ रख दिया और जो आसपास के पण्डित थे उनके गुरूदेव थे वे बुलाए गए। पर वे यज्ञ ऐसे हुआ करते थे कि उनमें बलि देनी पड़ती थी। कर्मकाण्ड ऐसे ही थे। ऐसे बनाए हुए नियम थे। कर्मकाण्ड और कर्मयोग में फर्क होता है। संतमत कर्मयोग की शिक्षा देता है, कर्मकाण्ड की शिक्षा नहीं देता। कर्मयोग में समाधि लगती है जैसे बच्चा खेलता-खेलता अपने को भूल जाता है वह उसकी समाधि होती है। ध्यान में बैठे हुए सुमरिन करते-करते अपने आप को भूल जाओ वो समाधि होती है। अपने काम में लगे-लगे अपने आपको भूल जाओ वह

कर्मयोग की पूर्णता होती है और जब कर्मयोग पूरा हो जाएगा तो आपका ज्ञानयोग स्वयं ही बनता चला जाता है और जब ज्ञानयोग पूरा हो जाता है तो भक्ति योग भी बन जाता है। राधास्वामी मत तो भक्ति योग का रास्ता है। इस रास्ते में शुरू से ही भक्ति पकड़ाई जाती है। इसमें कर्मयोग और ज्ञानयोग स्वतः ही पूर्ण हो जाते हैं। तो वो इकट्ठे हो रहे थे, आसपास के पण्डित आ गए। उनके गुरूदेव कहने लगे कि इसमें राजा को बलि देनी पड़ेगी। राजा अन्तरमुखी था वह कहने लगा कि बिना अपराध के मैं तो एक कीड़ी भी नहीं मार सकता मैं बलि कैसे दे सकता हूँ। गुरूदेव मेरे वश की बात नहीं है, मैं मजबूर हूँ। उनको क्रोध आ गया, कहने लगे कि ये तो गल्त बात है। तू क्षत्रिय है तेरे को बलि देनी पड़ेगी नहीं तो तेरे यज्ञ की पूर्ति नहीं होगी। उसने कहा कि यज्ञ की पूर्ति सौ बार न हो। मैं मेरी प्रजा को मार-मारकर, काटकर खाने लग जाऊँगा तो मैं कहां का राजा हूँ। मुझे धिक्कार है। उन्होंने कहा कि राजा तूं नरक का भोगी होगा। उसने कहा कोई बात नहीं मुझे नरक भी स्वीकार है मेरे जीवों के लिए। वो सबका पिता था सतगुरू सबका पिता होता है। अपने प्यारों को सम्भालता है इसी तरह से ।

वह कहने लगा कि मेरे वश की बात नहीं है, मेरा तो सारा संसार ही अंग हो चुका है। जो आदमी अन्तर में चला जाता है वह इस सष्टि की जान से मिल जाता है तो सारी सष्टि अपना शरीर दिखने लग जाती है ऐसे आदमी को। वह कैसे अपने अंग को काटेगा? कैसे मीट खाएगा? कैसे शराब पीएगा? महात्मा, अपनी मुक्ति के लिए नहीं आते वे अपनी मुक्ति तो करवाए होते हैं पहले ही। उनका शरीर सारा संसार है और जब तक सारे संसार की मुक्ति नहीं होती उनकी मुक्ति नहीं मानी जाती ये शिवव्रतलाल जी महाराज कहते हैं, मैं नहीं कहता। जब तक एक भी जीव दुःखी रहता है तो महात्मा दुःखी रहता है। वो कहने लगे कि आपको हम जाति से गिरा देंगे। समाज के ठेकेदार बैठे हुए हैं यहां पर। राजा ने कहा कि कुछ भी

कर लो। अन्तर का स्वाद ही ऐसा होता है कि सारी दुनिया पीछे लग जाए तो वो आदमी पीछे नहीं हटता, आँखें बंद करके आगे बढ़ता जाता है और कोई रूकावट डालने वाला भी पैदा नहीं होता और होता है तो बिखर जाता है। अन्धकार तो क्षणिक होते हैं थोड़े समय के लिए आते हैं, शांति की परीक्षा लेने के लिए आते हैं। तो वह कहने लगा कि काई बात नहीं, मेरे को चाहे नरक भी मिल जाए और चाहे जाति से भी गिरा दो। कहने लगे तू वैश्य हो जाएगा, शुद्र हो जाएगा। उसने कहा मुझे मंजूर है मैंने तो आत्मा की क्षत्रियता पाई है, मुझे बाहर की क्षत्रियता की जरूरत नहीं है। आत्मा होती है क्षत्रिय तो। ये तो हमने बखेड़े खड़े कर दिए यहाँ आ करके। ब्राह्मण तो वो होता है जो अन्दर जाता है।

ब्राह्मण सोई जो ब्रह्म पिछाणै
बाहर जान्दा भीतर आणै।
पांचों बस कर झूठ नहीं भाखै
दया जनेऊ घट में राखै।
काम,क्रोध,लोभ,मोह,अहंकार न होई
चरणदास ब्राह्मण है सोई।।

इस जात-पात को मैं नहीं मानता राजा कहने लगा। ये तो बाहर की जात बना दी आप लोगों ने। मैं तो उस क्षत्रिय को मानता हूँ जो अन्दर में क्षत्रिय है। जो सबका शहनशाह है क्षत्रिय तो वह होता है। जो सबकी रक्षा करता है। अपने जीवों को मारता नहीं है वह तो उनकी रक्षा करता है। मैं तो उस क्षत्रियपने के धर्म को मानता हूँ। उन्होंने राजा को जाति से गिरा दिया और वैश्य बना दिया। वह नहीं घबराया क्योंकि अन्दर की ताकत उसके साथ थी। आत्मा की ताकत उसके साथ थी। क्या परिणाम निकला उसका? उसका राज इतना फला-फूला कि सोने के भण्डार लग गए। उनके राज्य में जब कोई भी बाहर का अजनबी आता था, प्रजा का आपस में इतना प्रेम था कि एक ईट और एक रूपया उसको सभी देते थे। वह

अपना काम-धन्धा खड़ा कर लेता था। कर्मयोग जब चल पड़ता है तो उसको रोकने वाला भी कोई नहीं होता है। कर्मकाण्ड छूटकर कर्म-योग शुरू हो जाता है वहां पर। कर्मयोग जब शुरू हो जाता है तो कर्म के अन्दर की जो ताकत है, जिसको शक्ति कह लो, ऊर्जा कह लो, कुछ कह लो उसका फिर सभी के साथ मेल होने लग जाता है और जब कर्मी व धर्मी दोनों मिल जाते हैं तो वहां से उन आदमियों के लिए भण्डार खुल जाता है। हम कर्मयोग नहीं करते, कर्मकाण्ड में फँस जाते हैं। उसका राज्य इतना फला-फूला कि भण्डार भर गए सोने के। आसपास के जितने राजा थे उनके आग लग गई इस बात की कि इसके तो सारे ठाठ-बाठ हो गए और हम रह गए। कर्महीन लोग ऐसे ही होते हैं। उन्होंने उस पर धावा बोलना शुरू कर दिया। देखो ये भी क्या मौज होती है मालिक की। इतने तक वह रहा तब तक किसी की हिम्मत नहीं हुई नजर उठाने की, उनके जाते ही बन्दूक उठा ली और यह कोशिश रही कि जितना भण्डार यहां इकट्ठा हो रहा है उसको लूट लें लेकिन उसमें भी कुछ मौज थी। वहां जितने लोग रहते थे, वे अग्रवाल समाज के लोग थे, वहां से उठकर सारे देश में फैल गए। सारे देश पर राज किया उन लोगों ने क्योंकि सारे देश का भला करना था। वे अच्छे आदमी थे और अगर वे एक जगह घुटकर रह जाते तो किसका भला होना था।

कोई चीज हमें बुरी लगती है पर पता नहीं क्या राज होता है, क्यों अच्छी होती है वह चीज, आगे चलकर के पता चलता है इन बातों का। नानक देव जी की भी एक मिशाल आती है कि वो घूमते हुए, भ्रमण करते हुए जा रहे थे, एक गाँव में चले गए वहां बड़े अच्छे आदमी थे, बड़ी बढ़िया सेवा की। कर्मयोगी आदमी थे जब वे चलने लगे तो कहने लगे कि तुम्हारा गांव उजड़ जाए। सोचो क्या कह रहा हूँ मैं कि तुम्हारा गाँव उजड़ जाए। अगले गाँव में गए तो सारे बदमाश थे। नानक जी कहने लगे कि तुम युगों-युगों तक बसो। जो साथ थे वे नहीं समझ पाए इन बातों को। प्रश्न

खड़े कर देते हैं बुद्धि वाले जीव ऐसे ही होते हैं। समझते नहीं हैं बातों को कि ये क्या कह दिया महाराज आपने वहां तो कह दिया कि उजड़ जाओ और यहां आकर कह रहे हो कि तुम युग-युग बसो। नानक जी कहने लगे कि वे अच्छे आदमी हैं जहां भी जाएंगे गांव के गांव को सुधारेंगे एक-एक आदमी। ये जहां भी जाएंगे सत्यानाश करते चलेंगे इसलिए ये यहीं पड़े रहें तो ठीक है। संत सतगुरू ये भेद समझाता है हमें। वैद्य होते हैं हमारे वो। नाड़ी पकड़कर इलाज बता देते हैं। दाता की दया का वर्णन नहीं किया जा सकता। इसी तरह भागीरथ की बात आती है। कहते हैं कि क्या फायदा मिलता है राम के नाम लेने का?

भागीरथ राजा सगर की पीढ़ी में से थे, खानदान में से थे। राजा सगर की कोई 16000 सन्तान कह देता है कोई 60000 कह देता है। उन्होंने यज्ञ किया हुआ था। लिखित में आता है कि उसका इतना प्रताप फैलने लग गया था कि इन्द्र ने उसके यज्ञ का घोड़ा चुराकर के कपिल मुनि के आश्रम में जाकर बाँध दिया। ये आप लोगों के बड़े भाग समझो कि ये कपिल मुनि की तपोभूमि है, कौल जहाँ इकट्ठे हुए हो आप। ये गुरू ब्रह्मानन्द की भूमि है जिसने तपस्या के लिए अपनी इन्द्री को काट दिया था। वो तपे थे। ये ऐसे ऐसे गुरूओं की भूमि है। ये दानवीर कर्ण की भूमि भी है, यहां पास में ही मन्दिर है वहां फसा था उसका रथ। कबीर साहब कहते हैं कि दो काम कर ले बस।

कबीर कहै कमाल से दो बातें कर ले।
एक साहिब की बन्दगी एक भूखे को कुछ दे।

तो यहां दानवीर कर्ण की भूमि भी है जहां सर्वस्व दान में देने की शिक्षा मिलती है। ये तपोभूमि भी है कपिल मुनि की, गुरू ब्रह्मानन्द की। ये दो चीजें हो जाएंगी तो सारा काम ही अपने आप बनता चला जाता है। तो राजा सगर का जो यज्ञ का घोड़ा था वह इन्द्र ने चुराकर कपिल मुनि के आश्रम में बांध दिया। राजा सगर की सन्तान ढूंढती ढूंढती आश्रम में

पहुंच जाती है। वो ध्यान में बैठे थे। ध्यानी थे बड़े योगी हुए हैं कपिल मुनि। कपिल मुनि नहीं होते तो अध्यात्म की अली, बे, ते शुरू नहीं होती। 25 प्रकति को देने वाला कपिल है। 25 प्रकति को बताने वाला, उसका भेद खोलने वाला कपिल मुनि है। तो, घोड़ा वहां बंधा हुआ मिल गया उनको, राजा के पुत्रों को। वे ध्यान में बैठे थे। उन्होंने इन्तजार किया लेकिन वे नहीं उठे तो उन्होंने निरादर करना शुरू कर दिया। कुछ का कुछ बोलना शुरू कर दिया। गन्दा बोलना शुरू कर दिया, उनका खूब निरादर किया। कपिल मुनि ने बड़ी कोशिश की कि ये किसी तरह मान जायें लेकिन जब नहीं माने तो वे तपस्वी थे उन्होंने श्राप दे दिया कि जाओ तुम सारे भस्म हो जाओ। वे सारे भस्म हो गए वहीं पर, एक बच गया जो दूसरी औरत का था - सगर अपने पौत्र अशुंमान को कहने लगा कि हे पौत्र(पोता) ये तो बड़ा पाप हो गया, इसका किस तरह पश्चाताप किया जाए। सारी सन्तान भस्म हो गई किस तरह इनका तर्पण किया जाए, इनकी आत्मा को कैसे मुक्ति दिलाई जाए तो उस पौत्र ने तप शुरू कर दिया। सारी जिन्दगी चली गई तप करते करते, फिर उसके पुत्र दिलीप की भी तप करते-करते सारी जिन्दगी बीत गई, उसके बाद उसका पुत्र आया भागीरथ। तीन पीढ़ी हो गई तप करते करते। सारी जिन्दगी परमात्मा को खुश करने पर लगा रहा लेकिन प्रकट नहीं हुए तो नारद ऋषि ब्रह्मा के पास जाकर पूछने लगे कि ब्रह्मदेव ये क्या खेल खेल रखा है आपने। उस तारकासुर राक्षस को तो इतनी जल्दी वरदान दे दिया आपने। वह तो जुल्म करने लग रहा है, अत्याचार करने लग रहा है लोगों पर, और इसकी तीन पीढ़ी हो गई तपते हुए, इसको क्यों नहीं आर्शीवाद देते आप? आपका खेल मेरी समझ में नहीं आया। तो ब्रह्मदेव कहने लगे - नारद, उसका पाप का घड़ा खाली था। इनका घड़ा पहले ही इतना भरा हुआ है कि इनसे वही नहीं खाली होने में आ रहा आगे कैसे भरूं मैं इसको। इन्होंने पाप इतना मोटा कर रखा है, इसने साधु को सता रखा है। इसने महात्मा को सता रखा है।

महात्मा को सताया हुआ बड़ा भारी पड़ता है। काल महात्मा को एक कील मारता है तो उसको हजार गुणा करके अदा करना पड़ता है। ये आपका इतिहास कहता है। क्या कहता है इतिहास? बचपन में मैंने एक कहानी पढ़ ली थी ईसा मसीह की। पहले वो पिछली पूरी कर देता हूँ फिर इस पर आऊँगा, याद दिला देना। तो नारद कहने लगा कि इतनी बात हो रही है फिर आप क्यों नहीं इसको आशीर्वाद देते। ब्रह्मा ने नारद को कारण बता दिया। इससे ये शिक्षा मिलती है कि हम अपनी औलाद का भविष्य बनाने वाले खुद होते हैं। हम पाप करते हैं तो औलाद को भुगतना पड़ता है, हमारे अन्दर संस्कार पड़ जाते हैं। हमारे दिल के अन्दर जो चीज छिपकर बैठी है क्या वह हमारी सन्तान में नहीं आएगी? ये नहीं हो सकता कभी भी। हमारे भीतर में हमारी चेतना में जो चीज समाई हुई है वही बालक में जानी है आगे। हमने जो बीज बोया है उसी को काटना होगा और उसका सबसे पहला परिणाम खुद मां-बाप या परिवार को भुगतना होगा। कहते हैं कि हमारी औलाद नाकामयाब हो रही है, नालायक हो रही है। ये बीज डालने वाले तो हम ही होते हैं। हमारा कसूर होता है ये। पता नहीं कहां कमी रह जाती है। कई बार आम के आक भी जम जाते हैं लेकिन आदमी में सारे गुण तो नहीं होते, अवगुण भी होते हैं। किसी-किसी समय में अवगुण उभर आता है। बड़े-२ महात्मा गिरा दिए अवगुणों ने। अवगुण उभरे हुए समय में सन्तान पैदा होती है तो वो फिर अलग ही खेल खिलाती है इसलिए कहते हैं कि आमों के आक भी जम जाते हैं।

मैं कह रहा था कि मैंने बचपन में एक कहानी पढ़ ली थी। क्या था उस कहानी में ? ईसा मसीह की कहानी थी वो कि ईसा मसीह के कील ठोकी गई। पढ़ते ही दिल के लगी ये बात। उसने दूसरों के लिये अपना जीवन कुर्बान कर दिया। गुरू गोबिन्द सिंह के बच्चों को दिवार में चिनवा दिया गया। दिल में घाव करती हैं बातें। महात्मा ऐसे ही आते हैं, वे दूसरों के लिए अपना जीवन कुर्बान करने के लिए आते हैं। ईसा मसीह

जाति-पाति के भेद को खत्म करने लग गया और कहा कि जाति-पाति मत विचारो। हरि के घर में जाति-पाति नहीं होती है। ऊँच-नीच का भेद समाप्त करने लग गया। उसकी पहली शिक्षा ये थी कि अपने पड़ौसी से जो प्यार करे वो मेरे पास आ जाना नहीं तो मेरे पास आने की जरूरत नहीं है। जो बड़े-बड़े समाज के ठेकेदार और धनाढ़य आदमी थे उनको ये बातें अच्छी नहीं लगी। ईसा मसीह कहता था कि मैं यहां परमात्मा की नगरी बसाने के लिए आया हूँ मैं परमात्मा का राज जमाने के लिए आया हूँ। जिसमें एक दूसरे का भाई-चारा होगा। एक दूसरे को बांटकर चीजें दी जायेंगी। कोई ऊँचा-नीचा नहीं होगा। जो धनाढ़य लोग थे, समाज के ठेकेदार थे उन्होंने इसका क्या फायदा उठाया? वे राजा के पास गए और कहने लगे कि फिर तो ये राज भी खुद ही चलाएगा और आपका राज्य छिन जाएगा। उन्होंने राजा को भड़का दिया। फिर तो एक की दो बातें बनाने वाले मिल जाते हैं। अन्त में उसे पकड़ लिया जाता है और उससे पूछा जाता है कि बता तेरा पिता - तेरा परमात्मा कहां है? उसके हाथ में कील मारते हैं और कहते हैं कि बुला तेरे पिता को। वो फिर भी कहता है कि मेरे खुदा इन लोगों को माफ कर देना। ये नादान हैं। ये नहीं जानते हैं कि ये क्या कर रहे हैं।

महात्मा सहनशील होते हैं वे अपने दुश्मन को भी माफ करते हैं, लेकिन उनके कील लगी हुई खाली नहीं जाती। उन्होंने हथेली में कील ठोक दी और धीरे-धीरे सारा शरीर बींध दिया कि बुला तेरा परमात्मा है तो यहां पर। ईसा मसीह तो चले गए लेकिन ईसाईयों ने सारे संसार पर राज्य किया फिर। वह चीज सारे संसार में क्यों फैली? क्या कारण था? ईसाई धर्म में कोई ध्यान-भजन की बातें नहीं हैं। ईसाई धर्म कहता है - रेजुरैक्शन आफ बाडी। हमारे धर्म कहते हैं - इममोरटेलिटी आफॅ दा सोल। वे कहते हैं कि जिस दिन कयामत आएगी, जिस दिन ये सष्टि खत्म होगी उस दिन सारे मुर्दे शरीर समेत खड़े होंगे, आत्मा का कोई पुनर्जन्म

नहीं मानते वे। वे शरीर का पुनर्जन्म मानते हैं। वो भी कयामत के दिन, जिस दिन ये सष्टि खत्म होती है। उस दिन इनके पैगम्बर आकर फैंसला करेंगे। यही मुसलमानों में मानते हैं, यही यहुदियों में मानते हैं। ये धर्म कहते हैं कि परमात्मा के राज्य में जिसने पाप किया है उसे नरक मिलेगा और जिन्होंने अच्छे कर्म किये हैं उन्हें स्वर्ग में पैगम्बर के पास जगह मिल जाएगी। ईसाई धर्म में ध्यान भजन की बातें न होने के बावजूद भी वह क्यों फैला? क्योंकि ईसा मसीह का चोला छोड़ने का तरीका अलग था। सन्त ये मांग कर आते हैं कि दाता मेरे जन्म में भी राज हो और चोला छोड़ने में भी। चोला छोड़े तो ऐसे कि उसमें भी तेरा नाम फैले। ईसा मसीह के शरीर पर लगी हुई एक-एक कील काल महाराज को कई गुणा करके अदा करनी पड़ी। करनी पड़ती है, ऐसे नहीं होता उनका शरीर। पांच तत्व का जरूर होता है पर उन्होंने निखार रखा होता है। अग्नि में तपा रखा होता है।

कहते हैं कि सन्तों के दरबार में जो भी जाता है सबकी इच्छा की पूर्ति होती है। अगर इच्छा की पूर्ति नहीं हो तो फिर वह सन्त भी नहीं है। सभी मुक्ति की इच्छा लेकर तो जाते नहीं। कोई बेटे, पोते, गद्दी आदि की लेकर जाते हैं। उन्होंने दिल से जिसको आर्शीवाद दे दिया वह अवश्य पूरी होती है। आपके शास्त्र बताते हैं कि राक्षस तपस्या करते हैं तो परमात्मा को उनको भी दर्शन देना पड़ता है। जिस मन से, जिस हिसाब से, वति से, जो तपस्या करता है उसका फल उसको देना पड़ता है, ये नियम है कुदरत का। लेकिन उसका इलाज भी साथ की साथ देते हैं वे। अन्त में जीत अच्छाई की होती है। एक-एक कील ने ईसा मसीह के प्यारों के दिल में घाव कर दिये। खुदा के प्यारे को मत सताना, सता दिया है तो लेने के देने पड़ जायेंगे। उस वक्त वे चुप रहे लेकिन संस्कार जागने का वक्त आता है। सोते हो तो जागने का समय भी आता है। ये सष्टि का चक्र होता है, जागति, स्वप्न और सुषुप्ति। इसी हिसाब से रचना भी

होती है। एक बार यह जागति में आती है, फिर सूक्ष्म में और फिर कारण में जाकर समा जाती है। यह नियम हर जगह काम करता है। जो प्यारे थे उनके दिलों में घाव हो गए, घाव होने से क्या होता है। घोड़े की गर्दन में एक कील मार दो या सूल चुभा दो। दुलती मार मार कर अपने आप को घायल कर लेता है वह क्योंकि कील दूसरी जगह लगी है दुलती दूसरी जगह लग रही है, घाव कहीं ओर है। जब तक वह कील नहीं निकाली जायेगी वह अपने आप को यूं ही दुलती मार मार कर घायल करता जाएगा। कुदरत को उसका इलाज करना पड़ेगा। दूसरे लोग खड़े हो गए ईसा मसीह बनकर कि हम हैं उसके पुत्र, हम चलेंगे उसके रास्ते पर। दूसरे कहते हैं कि नहीं तुम नहीं चलोगे। वे कह रहे हैं कि ईसा मसीह खुदा था दूसरे कहते हैं कि नहीं था और यह कहकर उनको फांसी तोड़ दिया। उनको फांसी तोड़ा तो लोगों के दिलों में घाव का दर्द बढ़ गया।

चुभन होती है तो दिलों से तरंग निकल कर सारे ब्रह्माण्ड में फैलती है, यह साईस कहती है। डिमाण्ड रखो सप्लाई आयेगी। माँग की पूर्ति आयेगी। पर हमारी मांगों में जान नहीं होती। माँग को तपाओ। मांग दिल का ख्याल होता है। देखने में तो काल्पनिक होता है। असलियत नहीं होती। आप कोई मकान बना लो या कोई दूसरा काम करो पहले ख्याली तस्वीर दिमाग में बनानी पड़ती है। उसका नक्शा बनाना पड़ता है सोचना पड़ता है। जितना ज्यादा सोचते जाओगे उतनी ही सुन्दर चीज बनती जाएगी। तस्वीर बनाने वाला चित्रकार सोचता रहता है, काम करता रहता है। पहले दिमाग में बनाता है, स्वयं को सुन्दर बनाता है फिर बाहर सुन्दरता निकलती है। गन्दा आदमी पहले विचार से खुद को गंदा बनाता है फिर बाहर गन्दगी निकलती है। पहले अपने घर के अन्दर नाश करते हैं फिर बुराई बाहर जाती है। उनको फाँसी तोड़ दिया फिर और तैयार हो गए, उनको तोड़ दिया फिर दूसरे और इसी तरह तैयार होते गए क्योंकि ईसा मसीह ने प्यार और त्याग का ऐसा बीज डाल दिया था। वो पेड़ ऐसा

लगाया हुआ था उसका फल ऐसा था। वह फल खाते-खाते सारी दुनिया नहीं छिकी और वह खत्म होगा भी नहीं ऐसा बो कर गए हैं। त्याग ऐसी ही चीज होती है। प्यार और प्रेम का दिलो में घर करने का बीज बो गए उसे कैसे खत्म कर सकते हो? तुम तड़फते हुए घूम रहे हो कि दो शब्द मालिक के प्यार के कहीं सुने। आती थी मेरी बहनें - मैं एक महीने के लिये हिसार गया था। कहती थी - भाई किस तरह शान्ति मिले - हम मालिक के दो शब्द सुनने के लिये तड़फते फिर रहे हैं हमें वे शब्द नहीं मिल रहे। मैंने कहा तुमने एक बात नहीं सुनी-मदर टेरेसा हुई है जब वह अपनी जवानी में थी, भारत आ रही थी, वो अध्यापिका थी। एक बार रेल में जा रही थी। उनको दो मिनट के लिए दष्टान्त हो गया उनको ईसा मसीह दिखाई दिए। देखो ख्याल क्या काम करता है? ये कहते हैं कि आध्यात्मिक आदमी तो ख्याल में जीता है असलियत नहीं होती।

ख्याल के बिना एक कदम आगे बढ़कर दिखा दे कोई। मैं जमानती हूँ इस बात का। उठकर यहां तक आए हो पहले ख्याल में उठकर आए हो फिर पैर नीचे रखा है। पहले ख्याल में यहां आए हो। ख्याल में नक्शा बनाते हो चीज का फिर उस पर अमल शुरू करते हो। बात चली थी कि उसको ईसा मसीह के दर्शन हुए - वे कहने लगे पुत्री तेरा ये काम खत्म हो गया। अब आगे बढ़ और दूसरा काम शुरू कर दे। लोगों की भलाई का काम शुरू कर दें। मैं तेरे साथ हूं। उन्होंने सबसे पहले नर्स की ट्रेनिंग ली। ऐसा ही होता है जब आदमी को अपने खुदा के दर्शन होते हैं तो उसे कुछ नहीं दिखता। उसने दुखियों का दुःख बांटना शुरू कर दिया। जो कोढ़ी थे खुद हाथ से सफाई करनी शुरू कर दी । क्यों कर दी क्योंकि उस कोढ़ी के अन्दर वे ईसा मसीह को देखती थी। एक औरत कहने लगी कि माता मैं इन कोढ़ी, बिमारों, बूढ़ों को हाथ लगाती हूँ तो मुझे नफरत आती है। मदर टरेसा कहने लगी पुत्री इनको कोढ़ी बिमार समझकर हाथ मत लगा, इनको ईसा-मसीह समझ कर हाथ

लगा फिर नफरत नहीं आएगी। मदर टरेसा, ने अपना काम शुरू कर दिया और पता नहीं कितने देशों में कोढ़ी लोगों के, बूढ़ों के, अनाथों के आश्रम बना दिए। इतना काम कर दिया कि उसको संसार का सबसे बड़ा इनाम देना पड़ा। देखों ख्याल ने क्या खेल खेल दिया। मैंने कहा तुम्हारा ख्याल कहां गया। तुमने ध्यान में बैठना छोड़ दिया, तुमने सोच लिया कि हमारे सतगुरू चले गये। सतगुरू कभी जाते नहीं हैं। सतगुरू हमेशा साथ रहते हैं । जिसने सोच लिया कि चले गये तो उसके लिए चले भी गए ये भी बात होती है। ईसा मसीह तो 2000 साल पहले चले गए थे। तुम्हारे बादशाह को गए तो एक साल भी नहीं हुआ तुम्हारा ईसा कहां खो गया। तुम्हारी शान्ति कहां चली गई। उन्होंने कहा भाई हमें शान्ति मिली। मैंने कहा अगर तुम्हें शान्ति मिली तो मेरा भाग्य है। हर रोज आती थी ये कई कईयों को लेकर। कई बहने यहां बैठी हुई हैं। कहती थी जाने का दिल नहीं करता-मैंने कहा जाना भी पड़ेगा काम भी करना पड़ेगा। काम करोगी तो तुम मेरी बहनें हो नहीं तो मेरी कुछ नहीं लगती।

कील की बात चली थी - कि वो दिलों में बीज बो गए थे। सुनो एक बात सुनाता हूँ, एक भाई आ गया और कहने लगा कि मेरी धर्मपत्नी को गर्भ है और गर्भ पुत्र से बात करती है वह और वह पुत्र कहता है मुझे विवेकी पुरूष की कहानी सुना माता। अपना ही सत्संगी था। वह भाई कहता कि जागते हुए बात करती है स्वप्न में बात नहीं करती। मैं पूछता हूँ बराबर में बैठकर के बातें और साथ की साथ बताती है कि देख ये जिद्द कर रहा है क्या करूं कैसे दिल बहलाऊं। यह हकीकत बात है। मैंने कहा कि तूने शहनशाह का नाम ले रखा है, उससे बड़ा विवेकी पुरूष ओर कौन है। राधास्वामी दयाल परमसंत ताराचन्द जी महाराज से बड़ा विवेकी पुरूष है कौन? एक-एक कदम पर दुःखों की कहानी लेकर आए हैं जो भी सुनेगा उसका दिल धड़केगा। जब तक ये सष्टि रहेगी तब तक दिल पकड़े जाएंगे जैसा ईसा मसीह ने उन लोगों का दिल पकड़ लिया था और जब

तक दिल पकड़ते रहेंगे तब तक उसका फल खत्म नहीं हो सकता। वो बीज खत्म नहीं हो सकता। तो मैंने उसे बताया कि ये कहानी सुना दे तूं। फिर एक रात को वह बहन रोने लग रही । आंख खुली पूछा क्या हो रहा है तो कहने लगी - विवेकी पुरूष की कहानी सुना रही हूँ दाता दयाल की । रो-रोकर सुना रही थी कि मेरे दाता ने इतने दुःख उठाये हैं। शुरू में जन्म लिया तो रोटी नहीं मिली थी तीन दिन तक माँ को। इतने पीड़ा भरे दुःख उठाये हैं उन्होंने । अगर उनका नाम रोशन करने के लिये आना है तो इस दुनियां में आ जा नहीं तो मुझे तेरी जरूरत नहीं है। उनके लिए समर्पित होकर आना बाहर आए तो, नहीं तो मेरा प्यारा नहीं कुप्यारा है तूं। देखों ख्याल ने क्या किया। ये तो साईस भी मानती है कि जैसे विचार होंगे माता के गर्भ में वैसे ही विचार आएंगे। जैसे विचार होंगे दिमाग में उनसे शब्द निकलता है ये विज्ञान कहता है। और वो शब्द सुनता है बच्चा । उनसे शरीर बनता है। मालिक के उस ख्याल और उस इच्छा ने वह शरीर बनाया है। मालिक तो ऐसे-ऐसे बीज बोकर गए हुए हैं उन्हें कैसे खत्म कर दोगे, उस पेड़ को कैसे काट दोगे तुम।

समय होता है जब चिराग जलता है तो आंधियां आ जाती हैं। यह कुदरत का नियम भी है। जो तुम्हारे दिलों में मालिक का प्यार है उसने धार बनकर टक्कर मारी। एक दिल का ख्याल ही सारी दुनिया को हिला देता है जैसे मदर टेरेसा की बात बताई। ऐसा मजबूत ख्याल जब अपना खेल खेलता है तभी पता चलता है। संत सतगुरू जीवित भी काम करते हैं और चोला छोड़कर जाते हैं उसमें भी काम करते हैं। क्या तुम्हारे शरीरों का मन्थन नहीं हुआ इस समय में, तुम्हारे दिमागों की चर्निंग नहीं हुई। मन्थन के बगैर रत्न नहीं निकलते और मन्थन के लिए देवताओं की भी जरूरत रहती है और राक्षसों की भी। स्वर्ग पर राक्षसों ने राज्य किया हुआ था तो कहा कि समुद्र का मन्थन किया जाए। मन्थन नहीं किया तो अमत नहीं मिलेगा और अमत नहीं मिला तो राज्य कैसे करेंगे। वो ब्रह्मा और

विष्णु के पास गए कि मन्थन कैसे करें तो उन्होंने कहा कि इस काम में राक्षसों की मदद लेनी पड़ेगी। आपको भी अपने अन्दर बुराईयों और अच्छाईयों का मन्थन करना पड़ता है। कभी बुराई ऊपर चढ़ आती है कभी अच्छाई, रई फेरते रहते हो, उसमें अमत भी निकलता है, और जहर भी निकलता है। जहर निकलता है तो गल्त दिशा पकड़ लेते हो। अमत पीते हो तो मुक्ति का रास्ता पकड़ लेते हो। क्योंकि बुरी चीजें बुरी चीज का साथ लेकर ही बाहर निकल सकती हैं इसलिए राक्षसों की भी जरूरत है हमें मंथन के लिए। बुरे आदमी के पास जाकर ऊँची-२ बातें सुनाने लग जाओगे तो आपकी बात नहीं सुनेगा। उसकी बातों में हां मिलाकर फिर थोड़ी-२ बातें उसके अन्दर डालनी पड़ेंगी। थोड़ा बहुत उस जैसा बनना पड़ेगा। लेकिन महात्मा होते हैं अपने अन्दर से कन्ट्रोल रखते हैं बाहर से थपकी देते रहते हैं। जैसा जीव होता है उसके साथ वैसी ही बात करते हैं। देवता राक्षसों के पास गए। उनको लालच दिया कि अमत निकलेगा उसको बराबर का बांट लेंगे। जब जाकर मन्थन हुआ। ये तो कार्ल मार्क्स भी कहता है कि नेचर परोसीड्स थरू राईज एंड फाल' ये उसका सिद्धांत है। कार्ल मार्क्स को सबसे बड़ा नास्तिक माना गया है। वो कहता है कि जो ये संसार आगे बढ़ता है यह विरोधी चीजों के उतार चढ़ाव से आगे बढ़ता है। एक चीज से कभी आगे नहीं बढ़ता। एक सुख में आप रहने लग जाओ वही दुःख लगने लग जाएगा कुछ समय बाद। एक स्थिति में नहीं रह सकते। एक बार अच्छी चीज आती है फिर बुरी चीज आती है। अच्छी चीज आती है तो बुराई उससे बढ़कर आती है और बुराई आती है तो अच्छी चीज उससे बढ़ कर आती है जैसे जीवन और मत्यु, दिन और रात, सुख और दुख आदि। फिर आगे काम चलता है सष्टि का। वह समुद्र मन्थन करके सष्टि का काम आगे बढ़ाना था नहीं तो वह रूक गया था। जरूरी हो गया था।

यह नियम होता है कि जब बीज पैदा होता है तो कुबीज भी साथ

आता है। आप पैदावार लेते हो। अच्छी-२ पैदावार लेने लग गए, ज्यादा खाद डालने लग गए, ज्यादा पानी देने लग गए तो साथ की साथ घास व अन्य बिमारियाँ भी बढ़ गई। अगर बिमारियों को काबू में नहीं किया गया तो सारी दुनिया का विनाश हो जाएगा। लेकिन बिमारी आती है तो उसका वैद्य भी देता है वो मालिक, उसका ईलाज भी देता है। यह अरविन्द भी कहते हैं कि नेचर प्रोग्रेसिज बाए रिदमिक एन्ड अनरिदमिक अपसरजिंगस। ये जो प्रकति है, कुदरत है वह स्वर और अस्वर, सुर-असुर कह सकते हो, सुर-असुर के उतार-चढ़ाव से आगे बढ़ती है। विज्ञान कहता है कि कोई भी कण पैदा होता है इस ब्रह्माण्ड में तो उसका विरोधी कण भी साथ की साथ आता है। यह पारटिकल एन्टी पारटीकल की थयूरी है। तो घबराना नहीं चाहिये। जो चीज है वह उभर कर आएगी क्योंकि बीज ऐसे पड़े हुए हैं। दिलों में बीज पड़े हैं। क्या हम भाग सकते हैं सतगुरू से? आप भाग सकते हो? जब सतगुरू के पास जाते हैं तो हमारा पुनर्जन्म होता है और हमारा तो जन्म हुए ही दस बारह साल हुए हैं सारे। ज्यादा से ज्यादा किसी के बीस पच्चीस साल होंगे। क्या वे भाग सकते हैं? यह बात गर्भ से ही हमारे खून में डल जाती है। उस ख्याल से, इच्छा से, प्रेम से, गर्भ में जो बीज डल गया क्या वह उस नाम को मिटने देगा, उस पौधे को मिटने देगा। इन बातों से घबराना नहीं चाहिए। जहां प्रेम मिलता है प्रेम बांटना चाहिए। प्रेम बांटोगे तो आपका बीज बिखरने लग जाएगा। आप भी बीज बोने लग जाओगे। ऐसा बीज बोकर जाओगे कि समेटने में नहीं आएगा। उसका फल खाते-२ सारी दुनिया छिक जाएगी वो खत्म होने में नहीं आएगा। और माताओं आपने ये बात नहीं सुनी कि अभिमन्यु को गर्भ में किले तोड़ने का ज्ञान हुआ था। ख्याल और पवित्र विचारों से ऐसा सम्भव होता है और तुमही इस देश को, समाज को बनाने वाली हो। जिस दिन तुम्हारे अन्दर ऐसे विचार पैदा हो जाएंगे उस दिन देश ऊँचा उठ जाएगा। वो खुद भी खाएगा और दूसरों को भी खिलाएगा। संसार का, मानवता का पोषण करेगा।

आपने कोरवों-पांडवों की कहानी सुनी होगी। कौरवों-पांडवों की जो माँ थी, वह भीष्मपितामह की भाभी थी, उसके औलाद नहीं थी और भाई गुजर गया था। वंश खत्म होने का समय आ गया था। भीष्म पितामह ने प्रतिज्ञा ले ली कि मैं ब्रह्मचर्य का पालन करूंगा। जब वह नहीं माना तो उसी खानदान में उसका भाई ब्यास भी था। ऋषि ब्यास से उसकी माता ने प्रार्थना की कि पुत्र ऐसी-२ बात हो गई है। अब माता ने प्रार्थना की तो उसके लिए यह माता का हुक्म था, बड़ी कठिन बात आ गई। ऋषि, सन्यासी और फिर काम वासना में जाना, गहस्थी में जाना। उसको बुलाया गया। उसकी शक्ल बदसूरत थी। जब पहली रानी को उसके आगे से गुजारा गया तो वह उसकी शक्ल देखकर डर गई। आपके शास्त्र कहते हैं ये बातें। डर गई तो ऋषि ब्यास आकर अपनी माता को बताने लगा कि माता अनर्थ हो गया, जुल्म हो गया कि क्या हो गया पुत्र। उसने कहा कि रानी डर गई इसलिए कमजोर बच्चा पैदा होगा, पीला बच्चा पैदा होगा। फिर दूसरी रानी को उसके आगे से गुजारा गया। उसने गन्दी शक्ल देखकर आँखें बंद कर ली। आँखों पर हाथ रख लिया। ऋषि कहने लगे कि माता अनर्थ हो गया। यह भी नहीं आया आपका वारिश तो सही। कि क्या बात हुई कि ये तो अन्धा पैदा होगा। पहली रानी से पीला पाण्डव पैदा हुआ था और दूसरी से अन्धा धतराष्ट्र। माता ने फिर कोशिश की कि पुत्र एक बार फिर मेरी प्रार्थना स्वीकार कर ले। तीसरी बार उन रानियों ने दासी को आगे अड़ा दिया। दासी ज्ञानी थी समझ गई कि महात्मा है, ऋषि है, कोई ऋषि सन्तान ही होगी तो वहां विदुर पैदा हुआ। उसने आनन्द लिया, उस चीज को भोगा। वहां विद्वान पैदा हुआ। एक ख्याल अच्छा था कि महात्मा है, महात्मा की ही औलाद आएगी। लेकिन एक बात बता देता हूँ कि ऋषि था, ऋषि ने माता की आज्ञा भी मान ली। लेकिन जब ऋषि गिर जाता है तो सष्टि हिल जाती है। ऋषि के अन्दर चेतना की बहुत ऊँची झूल चढ़ रही होती है। आत्मा की झूल ऊँची चढ़ रही होती है।

ऋषि सच्चाई से सन्तान पैदा करेगा तो सन्त पैदा होते हैं और अगर गिर जाता है तो राक्षस पैदा होते हैं। तो क्या महाभारत ने सत्यानाश नहीं करवा दिया। वो ऋषि का गिरना था। आज तक कहते हैं कि जहां कुरूक्षेत्र में आसपास में हम रहते हैं, महाभारत के समय की यहां किरणें निकलती हैं जो नुकसान पहुंचाती हैं। ऋषि के गिरने से और कहां नाश हुआ? रावण क्या था? रावण ऋषि के गिरने का परिणाम था। बाली, सुबाली, तीन भाई थे। उन्होंने सोने की लंका बना दी और उसमें राज्य करने लग गए। ऋषि विश्रवा का पुत्र था कुबेर। कुबेर ने आकर उनसे वह सोने की लंका छीन ली और राज्य करने लग गया। लड़ाई हुई, लड़ाई में मार-पीट करके उनको भगा दिया। उन्होंने एक षडयन्त्र रचा कि कुबेर ऋषि का पुत्र है, ऋषि ब्रह्मण है बड़े ऊँचे विचारों का। उन्होंने अपनी पुत्री तैयार कर दी कि पुत्री इसको रीझा, मोहित कर इसको। यह ब्राह्मण है और तू राक्षस पुत्री है ब्राह्मण की और राक्षसों की सन्तान मिलकर एक नई सष्टि को जन्म देगी। ब्रह्मज्ञानी भी होगा और ताकत से राक्षस भी होगा। उसने ऋषि को मोहित कर लिया। उसने शादी की उनसे रावण का जन्म हुआ। जो शिष्य थे वे सारे छोड़कर चले गए कि ऋषि तो गिर गया अब यहां रहने का काम भी नहीं है। क्या त्राहि मचायी उस रावण ने? सारी दुनिया को हिलाकर रख दिया । उसके लिए विष्णु भगवान को अवतार लेकर उतरना पड़ा। हिरण्यकश्यप, हिरण्याक्ष क्या थे? दोनों के लिए फिर अवतार धारण करना पड़ा विष्णु भगवान को। कश्यप ऋषि की दो पत्नियाँ थी दीति और अदिति। जो अदिती थी उसके तो सारे ही देवता सन्तान थे, जो दीति थी वह चलायमान थी। उसका मन चलायमान हो गया। ब्रह्म मुहूर्त में ऋषि ध्यान में बैठा हुआ था ध्यान में से उसे उठा लिया उसने। उठा लिया तो ऋषि कहने लगा - तूने पाप कर दिया दीति। कि क्या बात हो गई महाराज? कि तूने पाप किया है इस समय में। कश्यप ऋषि कहने लगा कि तूने पाप करवा दिया सुबह-२ ब्रह्म वेला में और तेरे

राक्षस पैदा होंगे। उससे हिरण्यकश्यप और हिरण्याक्ष पैदा हुए थे। वह राक्षसों की मां कहलाई हिरण्याक्ष ने सारी सष्टि का काम ही रोक दिया। कहते हैं कि पथ्वी को मूंह में ले लिया। जब पानी में से पथ्वी बाहर आने लगी तो उसे खा गया, तब भगवान को वराह का अवतार लेकर के आना पड़ा। हिरण्यकश्यप के समय में फिर नरसिंह का अवतार लेकर आना पड़ा, दोनों भाईयों को मारने के लिए। तो क्या होता है ये? ये ख्याल ही होता है जो हमें यहाँ तक पहुंचा देता है। अपने ख्याल ऊँचे रखने चाहिएं। सबको, ये ख्याल रखना चाहिए कि सच्चाई की जीत जरूर होती है। और जो होता है मौज से होता है। बिना मौज के कुछ नहीं होता।

तो शुरू में जो कहानी चली थी राजा सगर की, भागीरथ ने ब्रह्मा को खुश कर लिया तब ब्रह्मा कहने लगा कि भाई गंगा स्वर्ग में से उतारनी है। उसका बहाव इतना तेज होता है उसे जमीन कैसे ओटेगी? शिवजी की जटा ओट सकती है उसको। उसके पास जाकर प्रार्थना की। कौन सी है वह गंगा? कौन सा वो चांद, कौन सा है सूदर्शन चक्र? वो गंगा, ध्यान में जाओगे तब पता चलेगा मान सरोवर का त्रिवेणी का स्नान किया जाता है। कैसे फव्वारे पड़ते हैं। शरीर से चेतना सिमटती है, कैसे खिंचाई होती है उसकी और फिर कैसे ठण्डे फव्वारे पड़ते हैं। कैसी ठण्डक होती है शरीर में, कौन सा है वह चांद? चांद तो मोहम्मद साहब ने भी देखा था अंतर में, ईद का चांद। वह चांद देखकर तो देखो। सारा भेद अंतर में प्रगट होने लग जाएगा। ब्रह्माण्ड खोलने लग जाएगा अपना रहस्य। क्या वैसे ही आ गए थे ब्रह्माण्ड के रहस्य? वैज्ञानिक हुए हैं। सबसे पहले वैज्ञानिक महात्मा हुए थे - प्लेटो और अरस्तु। प्लेटो जिसको अफलातून कहते हैं। उन्होंने परमात्मा का सिद्धान्त दिया, और साथ ही साथ अंदर झांककर देखा तो अंदर में जो प्रकाश का बहाव था - देखा कि यहां तो यह नियम काम कर रहा है। यही ब्रह्माण्ड में भी काम करता है। उन्होंने लिखकर रख दी चीजें। फिर कोपरनिकस आया उसने उठा लिया वही साहित्य प्लेटो और

अरस्तु का। सुकरात का शिष्य प्लेटो था और प्लेटो का शिष्य अरस्तु था। कोपरनिकस को पढ़ना पड़ा सारा का सारा साहित्य। उसने कहा कि पथ्वी स्थिर नहीं है, यह तो घूमती है। सूरज स्थिर है। फिर कैपलर आ गया, कैपलर ने कहा कि धरती ही नहीं दूसरे ग्रह भी अस्थिर हैं। फिर गैलीलियो आ गया। जो कैपलर था वह कहता था कि अगर हम अपने आपको जान लेंगे, माइक्रोकोज्म को जान जाएंगे तो मैक्रोकोज्म अपने आप भेद खोल देगा। यानि उसके छोटे रूप को, शरीर को पढ़ लेंगे तो ब्रह्माण्ड का रहस्य अपने आप खुल जाएगा। कोपरनिकस का मामा पादरी था और उसको खुद को भी पादरी बना दिया गया था। उसके बाद गैलीलियो आया। गैलीलियो की शिक्षा तो मोनास्ट्री में हुई थी, साधुओं के बाड़े में शुरू में। फिर न्यूटन आ गया, उसको पकड़कर फिर न्यूटन चला आगे। न्यूटन कहता है कि प्लेटो इज माई फ्रैंड, अरिस्टोटल इज माई फ्रैंड बट माई बेस्ट फ्रैंड इज ट्रुथ। प्लेटो मेरा मित्र है, अरस्तु भी मेरा मित्र है लेकिन मेरा सबसे बढ़िया मित्र सच्चाई है। उसको भी प्लेटो और अरस्तु को पढ़ना पड़ा, उसके बिना रास्ता नहीं निकला क्योंकि उन्होंने अध्यात्म के आधार पर अन्तर में झांककर विज्ञान को एक बहुत बड़ा आधार दिया। ऐसा रहस्य लिखकर चले गए। न्यूटन ने बाईबल पर टीका की। सारा ईसाई धर्म ही यूनान के इन फकीरों के द्वारा दिखाए गए रास्ते पर चलकर ही बड़ा हुआ है।

अध्यात्म का ये होता है कि जितना ध्यान करोगे अपने अंतर में धंसते चले जाओगे। अन्तर में धसोगे तो जो गहराई की चेतना है वह खुलनी शुरू हो जायेगी। जब वह खुलनी शुरू हो गई तो फिर आपके सामने पौधा आ जाए, आदमी आ जाए, जब उस पर विचार जमाओगे तो उसका भेद खुलने लग जाएगा आपके अन्दर। उसमें से जो रेडिएशन आएगी वह पकड़ में आने लग जाती है। भेद आने लग जाता है। उसके बाद आईनस्टाईन आ गया न्यूटन के बाद, वह नहीं आता तो आज की

सांईस ही नहीं होनी थी। यह विज्ञान ही नहीं होना था। लेकिन ध्यान रखना चाहिए कि एटमबम भी नहीं होना था। आईनस्टाईन तो धर्म के ऊपर बहुत बोला है। जिसके अंदर ध्यान करने की शक्ति नहीं होती वह ब्रह्माण्ड के रहस्य को नहीं खोल सकता है। यह भी जरूरी नहीं है कि आस्तिक आदमी ही ध्यान कर सकता है लेकिन ब्रह्माण्ड में वही आदमी झांक सकता है जो अंदर में ध्यान करता है। अन्दर में खुलते हैं चांद और सितारे उसके, सूरज देखता है अन्दर में इसलिए सूर्यवंशी हो जाता है आदमी। चंद्र देखता है तो चंद्रवंशी हो जाता है। हमने तो पता नहीं कौन से वंश खड़े कर लिए। कोई वंश खड़ा कर दिया, कोई धर्म खड़ा कर दिया, कोई सम्प्रदाय खड़ा कर दिया। अरे सूर्यवंशी बनो, चंद्रवंशी बनो। अन्तर में सूरज देखो चांद देखो। तारे देखो, ताराचंद बनकर आओगे। सूरज देखो सूर्यवंशी राम बनकर आओगे, चंद्र देखो चन्द्रवंशी कष्ण बनकर आओगे। जब अन्तर में भेद खुलते हैं तब जाकर बाहर के पाट खुलते हैं।

भागीरथ गंगा ले आया उसके त्याग और तपस्या से क्या हुआ? उसी खानदान में दूसरी पीढ़ी में राम अवतार को जन्म लेना पड़ा। पहले राजा हरीश्चन्द्र तपे, उसी कुल में फिर भागीरथ तपे, फिर रामअवतार आया। हम तो एक पीढ़ी भी राम का नाम नहीं निभा सकते। एक पीढ़ी में राम का नाम कमाकर देखो, दूसरी पीढ़ी में ही सारे सुख सामने प्रकट हो जाएंगे। लेकिन जो इनमें फंस जाता है वह घटोतरी में आने लगता है। मैं तो अपनी कहानी सुनाता हूँ। हमारे गाँव के दो आदमी पूछने लग गए कि सारे गाँव में ये चार भाई पढ़ाई में अच्छे निकले और कोई नहीं निकल पाया। मैंने कहा चाचा - मेरे बाप में कोई तुम्हारे से अलग गुण नहीं थे। तुम्हारी तरह ही खेती की थी, एक काम अलग था, वो चाहे कहीं उठा, कहीं बैठा, उसने राम का नाम नहीं छोड़ा। नहाकर दो मिनट ध्यान में बैठा करता था चाहे सारे देवी-देवताओं को मनाया करता लेकिन ध्यान का अचूक नियम था। ध्यान में चेतना अन्दर जाती है और उसकी पींग बढ़ती

है, उस चेतना का ऊँचा झूला आता है। झूला ऊँचा आएगा तो वहां से रेडिएशन भी ऊँची उतरती है। औलाद भी ऊँची पैदा होती है। जो हमारे बाप ने काम किया था उसी से मिला है जो मिला है। हमने भी यही कोशिश की है कि उसी रास्ते पर चले जिस पर चलकर हमें बरकत मिली है। लेकिन हम क्या करते हैं? हम तो दूसरी पीढ़ी में ही चीज को खत्म करने लग जाते हैं। पूजा-पाठ करके देख लो इनका फल मिल जाएगा क्योंकि इनसे वति जुड़ती है, ख्याल जुड़ता है। ख्याल काम करता है ख्याल ताकत पैदा कर देता है आपके अन्दर। जब ख्याल पूरा बन जाता है तो साधन तो अपने आप जुड़ने लग जाते हैं। मैंने कहा कि मुझे तो उनके अन्दर एक यही बात अलग मिली थी दूसरे लोगों से। इसी चीज को हमने आगे बढ़ाने की कोशिश की है। पूरे उतरेंगे, नहीं उतरेंगे हमें तो पता नहीं, यह तो दाता ही जानते हैं। लेकिन हम क्या करते हैं? किसी का इतिहास उठाकर देख लो। किसी राजनीतिज्ञ को ले लो, किसी महात्मा या किसी नास्तिक की बात ले लो जो देश के सबसे बड़े नास्तिक हों, परमात्मा के नाम पर नाम है उनके। क्यों हैं परमात्मा के नाम पर नाम? क्योंकि उनके माँ-बापों के विचार पवित्र थे परमात्मा में थे। तब कोई परमात्मा का नाम रख्ता है।

माँ-बाप नास्तिक हो तो औलाद के नास्तिक नाम मिलेंगे। एक भाई से बहस हो गई। हिसार गया हुआ था वह कहने लगा ऐसे कैसे हो सकता है? मैंने कहा ऐसे होता है। मैंने देश के एक दो नास्तिकों के उसके सामने नाम गिनवाए। उसने कहा कि नाम तो वैसे भी रख देते हैं कोई भतेरी रख देता है, कोई माटी रख देता है। मैंने कहा भतेरी और माटी कब रखते हैं? भतेरी तब रखते हैं जब कई बच्चे हो लेते हैं और माटी जब रखते हैं जब माटी जैसा बच्चा होता है। फिर कहने लगा कि फिर भाग्य क्या हुआ अगर ऐसी बात है तो? मैंने कहा भाग्य वह चीज है, आप तो विज्ञान पढ़ते हो। बीज में जो चीज पड़ी हुई है बन्द, वह बीज का भाग्य

है। लेकिन बाहर आकर जब उसको वातावरण मिलता है। हवा मिलती है, पानी मिलता है जितनी खुराक दोगे उसका भाग्य चढ़ता जाएगा। खुराक बन्द कर दोगे तो भाग्य बन्द होने लग जाएगा। ये होता है भाग्य, भाग्य बनाने से बनता है। आगे का भाग्य हम बनाते हैं, पिछला बीज के अन्दर बन्द हो जाता है। आखिर बात यही है कि अपना ख्याल मजबूत रखा करो, पवित्र रखा करो, भाईयों के ख्यालों से भी ज्यादा माताओं के ख्याल पवित्र होने चाहिएं और तसल्ली रखनी चाहिए कि अच्छाई का नतीजा अच्छा ही मिलता है। दाता दयाल पर भरोसा रखना चाहिए। अध्यात्म कुछ देता है लेता नहीं है। आपस का प्रेम बढ़ाता है, दुश्मनाई नहीं बनाता। जो दुश्मनाई बनाता है वह अध्यात्म नहीं होता। उस परमात्मा के नाम को मत लो जो दुश्मनी बनाता हो।

महात्मा बुद्ध को भारत में नास्तिक कहते हैं। वह कहता था कि यदि कोई आदमी किसी की टाँग काट रहा है आरी से, कि साधु की टाँग काटने लग रहा है और उस साधु ने उफ कर दी है तो वह मेरा शिष्य नहीं है। क्यों नहीं है, वह कहता है कि यदि वह ऐसा सोचता है तो उसके दिमाग में से नफरत की रेडिएशन निकलती है उस समय। इससे वह अपना-२ नहीं सारे संसार का नुकसान करता है। ख्याल पवित्र रखना चाहिए, सहनशीलता रखनी चाहिए।

अनमोल रत्न

- *विचार पवित्र रखो और हमेशा सतगुरू की मौज में रहो।*
- *हर व्यक्ति को 24 घन्टे में से 2½ घन्टे भजन करना चाहिए। यही होता है 'असली कमाई में से दसवां हिस्सा गुरू को अर्पण करने' का सच्चा अर्थ।*

- परम संत ताराचन्द जी महाराज

पूर्ण सद्गुरू की आंतरिक पहचान

हुजूर महाराज राधास्वामी दयाल परम् सन्त ताराचन्द जी महाराज की मौज से सुबह चार बजे सत्संग हुआ था। उसमें यही बताया गया था कि यदि हम अपना ख्याल ऊँचा रखें, माताएँ अपना ख्याल ऊँचा रखें तो ऊँची वति की सन्तान पैदा होंगी और हमारा ही नहीं देश का और मानवता का भी नाम ऊँचा करेंगी। अपने ख्याल ऊँचें रखने चाहिएं। आज का जो बसंत पंचमी का दिन चुना गया है वह मालिक की दया से कुदरती ही चुना गया है। राधास्वामी मत की नींव भी आज के दिन ही रखी गई थी। स्वामी जी महाराज इस मत के आदि प्रवर्तक थे। वे एक गहस्थी क्या तपस्वी थे। ऐसे तपस्वी कि उनके जीवन के बारे में सुनते हैं तो दिल कांपता है। उन्होंने अपने आप को कितना तपाया। एक आम आदमी के वश की बात नहीं है। आम आदमी के वश की बात होती तो चीज इतनी उठती भी नहीं। सत्संग को उठाने के लिए, आगे बढ़ाने के लिए, असाधारण शक्ति को उतरना पड़ता है नीचे आकर के। उनका जीवन बहुत ही पवित्र रहा। उनका नाम शिवदयाल जी महाराज था। उनकी शादी माता नारायणी देवी से हुई थी। जब शादी होकर माता जी पहली बार आई तो स्वामी जी कहने लगे कि पिछले जन्म में हमारा बाप-बेटी का रिश्ता था। इस जन्म में हमारी शादी हो गई। जब स्वामी जी महाराज साधारण नहीं थे तो माता जी कैसे साधारण हो सकती थी। संग से संग मिल जाता है और जब संग से संग मिल जाता है तो वहां नई रचना खिलती है। पर ज्यादातर ऐसा हुआ है कि महात्माओं के घर में शान्ति नहीं होती। राधास्वामी मत में फकीरचन्द जी महाराज को ले लो उनको घरवाली की तरफ से परेशानी थी। नानक साहब के बारे में भी ऐसा ही कहते हैं और मस्ताना साहब के बारे में भी, और भी बहुत मिल जाएंगे लेकिन जब एक अनोखा संगम होता है तभी त्रिवेणी का स्नान पूरा होता है। ये संगम जब हुआ तो अंग्रेजों का समय था और

सारा काम शान्ति से बनता चला गया। उनके रास्ते में कोई रूकावट नहीं आई। अंग्रेजों ने भी कोई रूकावट नहीं डाली क्योंकि उन्होंने घर में रहकर अपना काम किया। कभी आगरा से बाहर नहीं गए। किसी को कोई परेशानी नहीं थी। किसी की बुराई नहीं की, कांट-छांट नहीं की। परेशानी वहां आती है जहां हम सच्चाई का वर्णन करने की बजाय दूसरों को काटने लग जाते हैं। सच्चाई का वर्णन कर दो दूसरे तो अपने आप ही पीछे छूट जाएंगे अगर वो नीचे रहते हैं तो। ऊँचे हैं तो उनकी भी पहचान हो जाएगी। आपस में लड़ने-झगड़ने की जरूरत नहीं होती है।

महावीर स्वामी की एक मिशाल आती है कि चार अंधे जा रहे थे। उनको हाथी के पास ले जा कर खड़ा कर दिया गया और पूछा कि बताओ हाथी कैसा है। एक ने पेरों के हाथ लगाया, एक ने सूंड के हाथ लगाया, एक ने पेट के हाथ लगाया, एक ने पूंछ के हाथ लगाया। जिसने पैरों के हाथ लगाया था उससे पूछा गया कि कैसा होता हैं हाथी? उसने उत्तर दिया कि हाथी तो पेड़ का मूल है, मोटे पेड़ का तना है। जिसने सूंड पकड़ा उसने कहा कि पतला-पतला लम्बा सा है। जिसने पूंछ पकड़ी उसने कहा पतला और छोटा और बाल होते हैं। जिसने पेट पर हाथ लगाया था उसने कहा कि वो तो पसर रहा था, पूरी गांठ थी। चारों का वर्णन सुन लिया गया। पहले का अनुभव सुनकर महावीर स्वामी ने कह दिया स्यात् कि ये भी सच है, दूसरे, तीसरे और चौथे सभी का सुनकर स्यात् बोला कि चारों ही सच हैं क्योंकि चारों ने देखा ही उस नजर से था और चारों के अनुभव को जब मिला दिया तो वह हाथी बन गया। पाँचवें ने जब देखा तो उनकी गल्तफहमी दूर करके उनको बताया कि हाथी ऐसा होता है। इसे महावीर का स्यात्वाद कहते हैं कि जो कुछ भी है ठीक है और मौज से होता है। किसी को गल्त नहीं समझना चाहिए। जिसे जैसा दिखाई देता है वह वैसा ही बोलता है।

कबीर साहब कहते हैं कि ये जीवन खांडे की धार है। सारी

जिन्दगी तलवार की धार पर चलना पड़ता है और थोड़े से भी चूक जाते हैं तो गिर जाते हैं और कट जाते हैं। स्यात्वाद कहता है, कि आपको किसी की भी बुराई करने की जरूरत नहीं है। ये बता दो कि मेरे अनुसार सच्चाई यह है। ज्यादा से ज्यादा ये बता दो कि वह यह कहता है। ये मत कहो कि यह उसने क्यों कहा । स्वामी जी महाराज की बातें चली हुई थी जिन्होंने ये मत चलाया है, वे अपनी धर्मपत्नी को कहते हैं कि आपका और मेरा तो पिछले जन्म में पिता-पुत्री का रिश्ता था, तो माता जी कहती हैं कि महाराज जी इस जन्म में भी अपना पिता-पुत्री का ही नाता रहेगा। लिखित में आता है कि उन्होंने पन्द्रह साल तक बन्द कमरे में बैठकर ऐसा ध्यान किया कि एक मिशाल थी। एक समय खाना खाते थे, चारपाई पर सोते नहीं थे।

सच्चाई की कोई चीज खड़ी करनी है तो तपस्या करनी पड़ेगी, उसके बगैर कोई इलाज नहीं है। आप कोई काम करने का विचार ले लेते हो तो जब तक मन के अन्दर उस विचार को तपाओगे नहीं तो सिरे नहीं चढ़ता, सिरे चढ़ाने के लिए उसके ऊपर सोचना पड़ता है, समय लगाना पड़ता है। इस आधार पर बड़ी-बड़ी खोज की गई हैं। आदमी काम करता करता कर्मयोग में इतना लीन हो जाता है कि दिन-रात वही काम उसके ख्याल में फुरता रहता है। ख्याल में रहता है तो उसको स्वप्न भी वैसे ही आने लग जाते हैं। जब तक आपको अपने काम के स्वप्न नहीं आते तब तक कर्मयोग पूरा नहीं होता है। तब तक ख्याल कच्चा है। ख्याल कच्चा है तो परिणाम भी कच्चा है। किसी भी क्षेत्र की बात ले लो, कहीं जाओ, ये बात हमें करनी पड़ती है। सुबह के सत्संग में भी बताया था कि यदि कोई काम करते हैं जैसे मकान बनाना हो तो उसका ख्याल, उसकी तस्वीर हमारे मन में पहले चलती रहती है कि ऐसा ऐसा होना चाहिए। सुबह फसल बोनी है तो रात को किसान के मन में ये रहता है कि सुबह खेत ऐसा होना चाहिए, इस तरह बाहना है, बीज डालना है। जितना ज्यादा ख्याल

करेगा, वति करेगा उस काम में उतनी ही सफलता भी मिलती है। स्वामी जी महाराज ने आध्यात्मिक ख्याल को इतना तपाया कि पन्द्रह साल तक बन्द कमरे में रहकर तपस्या की। इतनी भारी तपस्या की क्योंकि उनको बाहर निकलने की जरूरत नहीं थी,न वो निकलना चाहते थे। वो चाहते थे कि कुदरती तौर पर ताकत बाहर निकलती है तो सही है नहीं तो सही नहीं है। जब आस-पास के लोगों ने उनको मजबूर किया कि महाराज अब तो सत्संग जारी करो समय आ चुका है। जब बर्तन भर जाता है तो बहने लग जाता है, किसी के वश की बात नहीं है। मिट्टी में युरिया खाद डालते हो यदि एक जगह ज्यादा डल जाता है और दूसरी जगह कम है तो जहां कम है वह जमीन अपने आप खींच लेती है। वह खुद भी बहकर उस तरफ चल पड़ता है। न खींचने वाले के वश की बात है, न रोकने वाले के वश की, दोनो मजबूर हैं। यहां से गर्मी उठती है बारिश की जरूरत पड़ती है। गर्म हवा होकर ऊपर उठती है। इस तरह से वो ग्रेडिऐंट बनता-बनता, खिंचाव बनता-बनता समुद्र तक चला जाता है। पहले तो खिंचाव थोड़ी जगह में बनता है फिर थोड़ी ओर ज्यादा में और इस तरह बनता-२ वो समुन्द्र तक फैल जाता है और बारिश को खींच लाता है। इसको मांग और पूर्ति का नियम कहते हैं। महात्मा कहते हैं कि इस ब्रह्माण्ड में हर तरह के विचार हैं, वैज्ञानिक भी इस बात को मानते हैं। माँग उठाओ पूर्ति आएगी। सपने लो। जो सबसे बड़े सपने लेता है वह सबसे बड़ा आदमी बनता है। जब ख्याल में पूरी तरह से लीन हो जाओगे तो सपने अपने आप ही आने लग जाएंगे। इस ब्रह्माण्ड में हर तरह के बीज मौजूद हैं। यह कुदरती बात है कि जब एक जगह चीज ज्यादा हो जाती है तो उसका फैलाव शुरू हो जाता है। स्वामी जी महाराज ने भी ऐसे ही किया था कि कुदरती चीज निकलती है तो निकले, मुझे जरूरत नहीं है और मेरे वश की बात भी नहीं है। अगर कुदरत की मॉग उठेगी तो अपने आप खींच लेगी। लोग आकर चारों तरफ घेरा डाल देंगे और घेरा नहीं डालते तो शोर मचाने

की जरूरत भी नहीं होती। ये तो अध्यात्म है। आज सारे बैठे हैं, कल भाग जाएंगे, तैयार रहना चाहिए आदमी को। अगर इस चीज के लिए तैयारी नहीं होगी तो दुःख उठाया जाता है और तैयारी होगी तो कुदरत अपने आप काम करती रहेगी, न आपके वश की बात होगी न किसी ओर के वश की। सूरज निकलता है तो सूरज के वश की बात भी नहीं है उसे निकलना पड़ेगा और सूरज नहीं निकले तो एक मिनट भी हमारा काम नहीं चल सकता। अगर एक पल के लिए अपनी जगह से उसने अपना काम बन्द कर दिया तो संसार में प्रलय आ जाएगी। पथ्वी भी नहीं रूक सकती। पथ्वी रूक गई तो फिर भी प्रलय आ जायेगी। गति वहीं होती है जहां एनर्जी होती है, ताकत होती है, शक्ति होती है। गति तभी रूक सकती है जब शक्ति खत्म हो जाएगी। उस चीज का अस्तित्व ही खत्म हो जायेगा। अगर गति है तो चीज की ताकत भी बरकरार है। पथ्वी को भी घूमना पड़ेगा, सूरज को भी निकलना पड़ेगा। हमको भी उसकी रोशनी लेनी पड़ेगी। हम भी मजबूर हैं और सूरज भी, कुदरत का खेल ही ऐसा है। चीज पक जाएगी तो स्वयं ही बाहर निकल जाएगी, जबरदस्ती करने की जरूरत नहीं है। स्वामी जी महाराज ने भी ऐसा ही किया। जो वस्तु ऐसे निकलती है वह खत्म होने में आती भी नहीं है। उसके बाद वहां से वह धार उठी। धार का एक हिस्सा आगरा में रह गया, दूसरा हिस्सा ब्यास में आ गया। आगरा से शिवव्रतलाल जी के माध्यम से होशियारपुर (पंजाब) और जूई (हरियाणा) में चली गई। जूई से दिनोद (भिवानी) और दिनोद से यहां आई। ब्यास से फिर तीन धारा बन गई । एक धारा ब्यास में रह गई, दूसरी सिरसा में चली गई। सिरसा में मस्ताना जी बड़े तपस्वी हुए हैं। कहते हैं कि रिद्धी-सिद्धियाँ उनके चरणों में झुकती थी। तीसरी, रूहानी सत्संग दिल्ली में कपाल सिंह जी महाराज के रूप में बह निकली। मस्ताना जी इश्क (प्रेम) में पागल थे तो कपाल सिंह जी इल्म (ज्ञान) के ज्ञाता थे। मस्ताना जी के अन्दर जो ताकत इश्क बनकर पकी, उधर दूसरी तरफ इल्म

के रूप में पक गई तो उसको प्रकट होना पड़ा, बाहर निकलना पड़ा। यह किसी के वश की बात नहीं है जहां कुदरत की मंजूरी होती है वहीं पर धार चल कर जाती है। जगह का अपना-अपना खिंचाव होता है।

मेरे महाराज जी ने राधास्वामी नाम ले लिया था। इससे पहले वे बड़े भारी तपस्वी थे। ज्येष्ठ की धूप में पानी में खड़े होकर तपस्या करने लग जाते थे। पांच साल की छोटी सी उम्र में रूहानियत की कमाई करने के लिए निकल पड़े थे। उन्होंने बड़ी तपस्या की और साधू-महात्माओं के पास बहुत घूमें, एक लंगोटी रखते थे। कई साधू ऐसे होते हैं कि अपने पेट का काम चलाते हैं, रोटी का काम चलता रहे लेकिन कई निःस्वार्थ साधू होते हैं वो सच्ची बात बता देते हैं। वे एक महात्मा के पास गए। उसने कहा कि बेटा अगर कोई शब्द भेदी मिल जाए तो कल्याण जो जाएगा नहीं तो काल के जाल में फंसा रहेगा। ये प्रकाश की, लाईट की बातें तो दुनियां बता देगी लेकिन जो शब्द का भेद खोले उससे मुक्ति का रास्ता मिलेगा, दुःखों का छुटकारा मिलेगा। इसी तरह बाबा जैमल जो ब्यास के आदि गुरू हुए हैं उनको बड़ी तड़फ थी कि नानक साहब ने पाँच शब्द धुनकार का वर्णन किया है, वह क्या है? अन्दर में पांच शब्द की धुनकारें उठती हैं ये क्या हैं? जिसके अंदर तड़फ होती है उससे रूका नहीं जाता। वे घर बार छोड़कर निकल पड़े। साधुओं के पास जाकर पूछने लगे कि ये पांच शब्द धुनकार क्या है? कोई बिरला ही जानता है। किसी ने भेद नहीं दिया। बाबा जी थक चुके थे लेकिन उनकी तड़फ बरकरार थी। जब तड़फ नहीं मिट पाती है तो दयासागर में लहर उठती है जो मदद करने के लिए स्वयं आगे आ जाती है। माँग उठती है तो पूर्ति भी आती है। वो निराश हो चुके थे लेकिन फिर उनको हरिद्वार की तरफ जाने वाले साधु मिल जाते हैं। उनसे भी शब्द भेद नहीं मिला। उन्होंने कहा कि हम हरिद्वार जा रहे हैं और वहां बहुत साधु तपस्या करते हैं वहां चलो। वहां जाकर भी कोई भेद नहीं मिला। क्या होता है पंच शब्द धुनकार?

''घर में घर दिखलाय दें सतगुरू सन्त सुजान
पाँच शब्द धुनकारें, धुन बाजे शब्द निशान।''

ये जो पांच धुन हैं, ये शब्द की कौन सी निशानी हैं। राधास्वामी मत में इसे खोलकर बताया जाता है। उनको हरिद्वार पता नहीं चला फिर ऋषिकेश चले गए। वहां जाकर पता चला कि एक साधु पहाड़ पर तप रहा है। खड़ा तप रहा है। वह कुछ भेद दे सकता है। पैदल चले गए। वह साधु खड़ा तप रहा था और किसी से बात नहीं करता था। ऐसे आदमी में गुस्सा हो जाता है। जब अन्तरमुखी होते हैं तो संस्कारों के बीज अन्दर में जलने लग जाते हैं। एक बार सारी इच्छाएं भड़कती हैं। सारी इच्छाओं में आग लगती है। क्योंकि जो बीज पड़े हैं उनके अन्दर एक गति पैदा हो जाती है। बिजली पैदा होने लग जाती है वह उन सबको जागत करती। उसको काबू में करने के लिए इस संसार में प्रेम के सिवा कोई दूसरी चीज नहीं है। सतगुरू के साथ अपने इष्ट के साथ प्रेम है तो रास्ता शांति से चलता रहता है नहीं तो ऐसा देखा गया है कि जब आध्यात्मिक आदमी उल्टे रास्ते पर चल पड़ता है तो वह किसी के काबू में नहीं रहता। उसके पास अधूरा भेद होता है, राक्षसी ताकत होती है और वह विनाश की लीला खेलनी शुरू कर देता है क्योंकि उसके अन्दर की बिजली जलती है इसलिए वह जिधर भी जाएगा उसे सफलता मिलने की संभावना भी रहती है। ऐसा व्यक्ति सबसे बड़ा नुकसान अध्यात्म का ही करता है। वे उस साधू के पास पहुंचे तो वह साधू टूटकर पड़ा कि यहां क्या करने आए हो? तुझे शेर खा जाऐंगे, यहां शेर आते हैं। बाबा जी कहने लगे कि आपको नहीं खाते तो मुझे क्यों खायेंगे। उनको जरूरत थी इसलिये वे डरे नहीं, ऐसे आदमी को बांध कर नहीं रखा जा सकता। महात्मा ने उनसे पूछा कि क्या चाहिए? उन्होंने कहा कि मुझे ये पांच शब्द का भेद बता दो जो सारे गुरूओं ने वर्णन किया है, कबीर साहब ने जिसका वर्णन किया है। वो चीज क्या है? महात्मा ने कहा कि मैं दो शब्दों का भेद बता सकता हूं उससे आगे का मुझे भी नहीं

पता है। उससे आगे का भेद जानने के लिए तुझे दूसरी जगह जाना पड़ेगा, मैं तुझे जगह बता देता हूं। मैंने अन्तर्दष्टि से देखा है कि आगरा में एक सन्त प्रकट हुए हैं जो इसका भेद देते हैं। इससे ज्यादा वह ज्यादा बता नहीं पाया। उनको ज्यादा पूछने की होश भी नहीं रही होगी। इतनी बात पता लगने के बाद तो बाबा जी ने उड़ारी ले ली। आगरा पहुँच गए। वहाँ जाकर फिर वही बात बनी। ढूँढते-२ कई दिन लग गए। पता नहीं चला, उदास होने लगे। ये अपनी-अपनी प्रारब्ध होती है। किसी को कोई चीज संघर्ष करके मिलती है, किसी को तैयार खड़ी मिलती है। उसी चीज के लिये एक आदमी सारी जिंदगी संघर्ष करता रहता है और किसी को वही चीज चुटकी में मिल जाती है। वे वापिस आने के लिए तैयार थे कि यमुना पर चार पांच साधु नहाने के लिए आ गए। वे आपस में स्वामी जी महाराज का नाम लेकर बातें कर रहे थे। बाबा जी ने पूछ लिया कि स्वामी जी कौन हैं? उन्होंने बताया कि ये शब्द का भेद देते हैं। बाबा जी खुश हो गए और कहने लगे कि मुझे अभी ले चलो। वे वहां गए और जाकर जैसे ही बैठे तो स्वामी जी महाराज कहने लगे कि अपना मेली आ गया भाई। वे भेद प्रगट करते रहे और दोनों की सैन में सैन मिल गई, प्रेम हो गया। कुछ दिन रहकर अभ्यास किया, नाम ले लिया और अन्तर का रास्ता खुलने लग गया। स्वामी जी महाराज ने उनको कहा कि ये रास्ता कमाकर खाने का है।

''घर में रहो कमाकर खाओ।
पर धन परतिरया से नेह न लगाओ।''

उन्होंने कहा कि अपना कोई काम ढूँढ ले, अपना कोई कमाई का साधन कर। इस रास्ते में आना है तो शुद्ध कमाई का खाना बहुत जरूरी है, ये माँगने का रास्ता नहीं है। माँग कर खाओगे तो पता नहीं देने वाला किस वति से देता है? किस कमाई का देता है?

''गहस्थी का टुकड़ा बहुत करे उत्पात।
भजन करे तो उभरै नहीं तो पाड़े आँत।''

मेरे महाराज जी कहते थे कि यदि साधु गहस्थी का भोजन खा लेता है तो उसे दो घंटे का ज्यादा अभ्यास करना पड़ता है। वे वहीं रैजमैन्ट में भर्ती हो गये। उनकी नौकरी आगरा में ही लग गई। खूब अभ्यास किया फिर रिटायरमैन्ट के बाद ब्यास जाकर उन्होंने अपना डेरा डाला। इसी तरह से मेरे दाता बहुत भटके, भटके क्या उन्हें तजुरबा लेना था। खुद भटकने में दूसरों के लिए रास्ता खोलते हैं। दूसरों को बता देते हैं कि यहां तक का अनुभव मैंने पा लिया है। आप उससे आगे चलने लग जाते हो और अगर ऐसा नहीं है तो आपको शुरू से चलना पड़ता है, घुटने रगड़ने पड़ते हैं। मेरे दाता ने इतनी तपस्या की लेकिन कोई रास्ता नहीं मिला। करते रहे, मान बढ़ाई मिलती रही। चारों तरफ लोग इकट्ठे हो जाते कि बड़ा साधु है। ये बातें वो खुद बताते थे। किसी महात्मा ने बताया कि जो असली चीज है वह शब्द भेद है। ये कहीं मिलता हो तो ले लो। उनकी एक इच्छा थी, जहां कहीं भी साधु महात्माओं के पास जाते थे एक ही प्रार्थना करते थे - हे मालिक! हे दाता! हे साधू महाराज! यदि आप में कोई शक्ति है तो मुझे ऐसा आशीर्वाद दो कि मुझे मुक्ति मिले, मैं दोबारा इस संसार में न आऊं। मुक्ति का तो हमें पता भी नहीं। हम इतने सारे क्या मुक्ति लेने के लिये आये हैं? हमें दुःखों का तो पता है कि हमारे दुःख दूर होने चाहिएं। कौन आदमी है जिसको दुःख नहीं है। राजा को भी दुःख है, प्रजा को भी दुःख है, गरीब-अमीर सभी को दुःख है। दुःख दूर करने के लिए महात्मा बुद्ध चले थे। दुःख दूर करने का रास्ता ढूंढ लेते हैं तो मुक्ति का रास्ता तो आगे खुद ही मिल जाता है क्योंकि मुक्ति के रास्ते में आपको कर्म भोग काटने पड़ेंगे। जब तक कर्म भोग हैं तब तक सुख और दुःख लगे हुए हैं। जब तक दुःख नहीं कटेंगे तो मुक्ति का रास्ता ही नहीं खुलता। पहले आपको दुःख काटने का रास्ता ढूंढना पड़ेगा और दुःख काटने का एक मात्र साधन है कि आप सुख में विलीन हो जाओ। अन्धकार को दूर भगाने का एक ही रास्ता है कि प्रकाश में चले जाओ।

शंकराचार्य कहते हैं कि दुःख कोई गुण नहीं है, सुख गुण है। सुख के अन्दर चले जाओ दुःख अपने आप समाप्त हो जायेगा। जब सुख की कमी होती जाएगी तो दुःख अपने आप बढ़ने लग जाएगा। फिर कहते हैं कि अन्धकार कोई गुण नहीं है, प्रकाश गुण है। अन्धकार तो प्रकाश की कमी है। जब प्रकाश कम हो जाता है तो अन्धकार बढ़ने लग जाता है। फिर कहते हैं कि ये जो रचना है ये सारी छायामात्र है। इसे असली समझना हमारी नादानी है। इसका वजूद तब तक रहता है जब तक हमें ज्ञान नहीं होता। जब तक यह नासमझी है तब तक हम इन्द्रियों में, पच्चीस प्रकतियों में उलझे रहते हैं। इनमें से हटकर जब आप प्रकाश में चले जाते हो, शब्द में चले जाते हो, तो इसका ख्याल छूट जाता है फिर कहते हैं 'अयं आत्मा ब्रह्म' यह आत्मा ही ब्रह्म है या 'एको ब्रह्म द्वितीय न अस्ति' एक ब्रह्म ही सत्य है दूसरा तो कोई दिखता ही नहीं। फिर कहते हैं कि ये सष्टि, सष्टि नहीं है ब्रह्म की कमी है, गुण ब्रह्म है, ये ब्रह्म की छाया है लेकिन छाया का भी अपना खेल होता है। यदि आपकी खेती के ऊपर पेड़ खड़ा है तो क्या उसकी छाया खेती पर असर नहीं डालती ? जब तक छाया के साथ चलते रहेंगे, छाया को असलियत समझते रहेंगे तब तक छाया ही हमारे लिए असलियत है और सुख दुःख का कारण है। कभी घट जाएगी कभी बढ़ जाएगी और जब इससे हटकर अन्दर प्रकाश में चले जाएंगे उस सुख में चले जाएंगे तभी दुःखों से छुटकारा मिल सकेगा। आत्मा का नाम है महासुख, महाप्रकाशवान सत्ता। वहां किसी चीज की कमी नहीं हैं। वो भण्डार है। उसके अन्दर चले जाएंगे तो दुःख अपने आप कटने लग जाएंगे। आपको टक्कर खाने की जरूरत नहीं है। यहां आने की या कहीं और जाने की जरूरत नहीं है। उस सुख के अन्दर जाकर उस सुख में विलीन हो जाओ, दुःख तो अपने आप हट जाएगा। दुःख इसलिए आया कि हम सुख से दूर हट गए थे। दुःख गुण नहीं है। इन्द्रियों पर आकर बैठ गए, आत्मा से दूर हट गए। आत्मा से हटते ही दुःख शुरू हो गया और

अन्धकार भी आ गया लेकिन जब अन्दर का चिराग जलने लग जाता है तो फिर आपके दुःख भी कटने लग जाते हैं। दुःख सूक्ष्म रूप में कटने लग जाते हैं। आपके दुःख स्वप्न में प्रगट होकर कट जाते हैं। सुख को ढूंढोगे तो मुक्ति तो अपने आप आ जाएगी। सिर्फ प्रकाश में जाना और प्रकाश में रहना और सतगुरू का ध्यान करना, आपको दुःख नहीं आएगा। लेकिन सतगुरू हर बात में कुछ सिखाता है, शिक्षा देता है। किसी ने दुःख को अनुभव का सबसे बड़ा विद्यालय कहा है। यह सत्य भी है। आप दुःख देने वाले से बुरा नहीं मानोगे। दुःख देगा तो सोचोगे कि पता नहीं मेरी क्या कमी निकालने के लिए ये दुःख आया है या ये बात किसी ने मुझे कही है। ऐसे सोचो कि ये सतगुरू की मौज थी। दाता को इस चीज में से कुछ अच्छा करना होगा।

प्रकाश में जाने से, उस ख्याल में रहने से दुःख तो अपने आप ही कटने लग जाते हैं लेकिन मुक्ति का रास्ता तो इससे आगे शुरू होता है। रास्ता वही है। उसी सड़क से जाना पड़ेगा। पहले दुःख काटने पड़ेंगे फिर मुक्ति की तरफ रास्ता बढ़ेगा। दुःख काटने तक तो आपको शब्द में जाने की जरूरत भी नहीं है। शब्द का रास्ता जब शुरू होता है तो मुक्ति का रास्ता खुलता है। देवी-देवताओं की पूजा या कर्मकाण्ड, हवन-यज्ञ इनसे कर्म बनते हैं - ये मैं नहीं आपके वेद बताते हैं। जब शुरू में सष्टि रची गई थी तो ब्रह्मा ने वेद रचे, यज्ञ का रास्ता खोला और कहा कि यज्ञ करते रहो क्योंकि सष्टि को आगे बढ़ाना था। जो भी चीज लेते हो देवी-देवताओं को अर्पण करो। (बचा-खुचा) बाकी बचा जो तुमको देते हैं वह खाओ। वे तुमको खुश रखेंगे, तुम्हारी इच्छाओं की पूर्ति करेंगे और तुम उन्हें खुश रखो। इससे यह सष्टि आगे बढ़ती रहेगी। इच्छाओं की पूर्ति होगी इसलिए किसी कामना को दिल में लेकर यज्ञ किए जाते थे कि मेरी यह इच्छा पूरी हो जाए। उस यज्ञ से कर्म बनते थे क्योंकि वह छोटा फल है। थोड़े समय का फल है कि मेरी ये चीज बन जाए। फिर जब उस यज्ञ का

फल पूरा हो गया जो हमने अग्निदेव से मांगा था फिर दूसरा यज्ञ बोल देते हैं। कभी अश्वमेध यज्ञ करते थे और कभी राजसूय आदि-आदि। उनके फल सीमित थे। लेकिन उनसे हमारे कर्मो का लेखा-जोखा बढ़ता चला जाता था।

अब सन्त सतगुरू कौन सा यज्ञ करना बताते हैं? उस यज्ञ में कर्म बनते थे और सुरत-शब्द योग में कर्म कटते हैं क्योंकि कर्मकाण्ड में तो आपके कर्म बनेंगे जैसे पूजा-पाठ, व्रत आदि में। लेकिन सन्त कर्मयोग बताते हैं। कर्म के साथ योग करना है। काम करते-करते स्वयं को भूल जाओ। भक्ति करते-२ अपने आप को भूल जाओ तो समझना आपका कर्मयोग पूरा हो गया। इतने मस्त हो जाओ कि उसमें अपने आपको भूल जाओ। उसको कहते हैं समाधि। शिव्रतलाल जी कहते हैं कि जो मनुष्य कर्म करते-करते अपने आपको भूल जाते हैं वे भी समाधि में जाते हैं। बच्चा खेलता-खेलता अपने आपको भूल जाता है तो उसकी भी समाधि लगती है लेकिन जब ज्ञान बढ़ जाता है तो मनुष्य की संवेदनशीलता भी बढ़ जाती है। तब वह छोटी सी बात पर दुःखी व छोटी सी बात पर खुश होने लग जाता है। उसका मन एक जगह टिक नहीं पाता और फिर अपने आप को भूल भी नहीं पाता। शिव्रतलाल जी महाराज कहते हैं कि अगर चलो तो कर्मयोग सबसे आसान तरीका है। उसमें काम करते-करते स्वयं को भूल जाते हैं क्योंकि हम स्थूल जीव हैं। शुरूआत कर्मयोग से करनी पड़ेगी। हम स्थूल जीव हैं इसलिये स्थूल चीज के साथ मिलकर हमारी वति जल्दी बंध जाती है, एकमएक हो जाती है। वह समाधि अवस्था आने लग जाती है और जिसको ऐसी अवस्था प्राप्त हो जाती है फिर सफलता उसके हाथ में होती है। यदि साथ में परमात्मा का नाम जोड़ लेते हैं तो वति जल्दी बंधती है। उसका फायदा बड़ा जल्दी मिलने लगता है। अन्दर में वति जुड़ती है तो ताकत बंधती है। आप ध्यान करते हो और आपकी वति इन्द्रियों में बिखरी हुई है। सुमरिन, ध्यान और भजन संतमत में तीन

चीजें आती हैं। सुमरिन का अर्थ है कि आप अपनी वति को दूसरी जगह से हटाकर सुमरिन के साथ जोड़ दो, गुरू के साथ जोड़ दो। हर समय उसमें ख्याल बनाए रखो। सुमरिन की ऐसी जरब लगनी चाहिए कि सुमरिन तार टूट न जाई। जिस तरह कुएं पर पानी भरते हैं। पानी भरते-भरते वहां नेजू (रस्सी) का निशान पड़ जाता है। वह निशान बड़ा गहरा हो जाता है।

''करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत जात ते सिल पर पड़त निशान।।''

अभ्यास होते-होते उस पर निशान पड़ जाता है। आप रस्सी को उससे बाहर निकालते हो वह थोड़ी देर में फिर वहीं गड्डे में जा मिलती है। सुमरिन भी हमारा ऐसा होना चाहिये कि वहां जरब लगनी चाहिये। दूसरे के साथ बात करते करते भी अन्दर में अपने आप एक माला फिरनी चाहिए। क्या ये काम नहीं हो सकता? हो सकता है। एक बार इसका कोर्स पूरा करना पड़ता है। पांच-दस दिन लगातार कोशिश करनी पड़ती है। फिर सुमरिन नहीं टूटता। जिस तरह से माँ होती है बच्चे को घर छोड़कर खेत में चली जाती है। काम करते करते मां का ख्याल बच्चे में होता है। बच्चा रोता है तो मां के दूध उतरता है। गाय अपने बछड़े को छोड़कर चली जाती है, वह चरते-चरते भी उसके ख्याल में रहता है। हम चलते-फिरते रहते हैं लेकिन सोचना तो बन्द नहीं करते। चलने-फिरने का तो पता भी नहीं रहता, सोचना चलता रहता है। जिस समय सुमरिन इतना पक्का हो जाएगा उस समय वति जुड़ने लग जाएगी। किसी चीज के जुड़ने से वहां पर ताकत पैदा हो जाती है। चेतना तो एक ताकत है बिजली की धार की तरह। जिसको वैज्ञानिक 'इलैक्ट्रोमैगनेटिक' रेडियेशन कहते हैं और मापते भी हैं। ग्राफ भी बताते हैं कि इतने ग्राफ पर आपकी इतनी वति जुड़ जाएगी तो स्वप्न आ जाएगा। इतनी ओर बढ़ जाएगी तो आप गहरी नींद में चले जाओगे। वह वति जुड़ती है तो जुड़ते ही ताकत

पैदा हो जाती है और आपके सामने प्रकाश के रूप में खिल जाती है। जो बिखरी हुई वति थी वह इकट्ठी होकर (गाँठ बँधकर) प्रकाश के रूप में परिवर्तित हो जाती है लेकिन फिर बिखरती रहती है। सुमरिन के बाद ध्यान का अभ्यास किया जाता है। सुमरिन से जो वति ऊपर आती थी उसको एक जगह टिकाने का ध्यान किया जाता है ताकि वो टिके, बार-बार गिरे नहीं। ऊपर चढ़ाने के लिए शब्द का अभ्यास किया जाता है, उसे भजन बोलते हैं। इन तीन चीजों का मेल होता है। जब ये तीन चीजें पूरी होती हैं तब रास्ता निकलता है। सबसे जरूरी है सतगुरू प्रेम व सुमरिन। यदि सतगुरू प्रेम नहीं है या अपने इष्ट का प्रेम नहीं है तो आपका ख्याल जुड़ेगा ही नहीं। कोई चीज चाहिए, निशाना चाहिए और हमारा मेल सबसे पहले साकार रूप के साथ हो सकता है। लेकिन हम तो ये करते हैं कि सभी चीजों को मानने लग जाते हैं। आप कई देवी-देवताओं की पूजा-पाठ करते हो तो आपको उसका फायदा तो होगा, आपको दुनियावी सुख सुविधाएं भी मिल जायेंगे लेकिन मुक्ति का रास्ता नहीं निकलेगा बल्कि आप अपने कर्मो की बेल बढ़ा लोगे। सुख व दुःख बढ़ते चले जाएंगे। जब हमारी वति जुड़ती है तो ध्यान बनने लग जाता है लेकिन उसमें भी हमको बड़ा अभ्यास करना पड़ता है। ध्यान को डाटने व प्रकाश में रहने के लिये तीन चीजें होती हैं। सतगुरू का प्रेम, सुमरिन व ध्यान।

सतगुरू प्रेम जब होगा तो आपकी वति जुड़ने लग जाएगी। आप अपने माँ-बाप, बच्चे या प्रेमिका किसी के भी प्रेम में जब आते हो तो दिमाग में ख्याली चीज खड़ी कर लेते हो। इस तरह से सतगुरू के साथ जब इतना प्रेम जुड़ जाता है तो ख्याल में चीज प्रगट होने लग जाती है। सुमरिन बढ़ता जाता है, वति भी जुड़ने लग जाती है। वति नहीं जुड़ेगी तो ख्याल में चीज प्रगट नहीं होगी। सतगुरू प्रेम जब बढ़ता है तो सतगुरू का स्वरूप बनने लग जाता है। साकार रूप के दर्शन होने लग जाते हैं लेकिन ये तो ख्याली है, अभी तक तो कुछ भी नहीं है। इससे सारे काम तो बन

जाएंगे जैसे सुबह सत्संग में बताया था कि मदर टेरेसा को दो पल के लिए ईसा मसीह के दर्शन हुए थे। उस दो पल के दर्शन ने उनकी जिन्दगी ही बदलकर रख दी। उन्होंने संसार के लिये अलग ही रास्ता खोला। वे सबसे बड़ी सेविका बनकर निकली। ख्याल से ख्याल जोड़ना पड़ेगा। कोई काम करते हो तो ख्याल को तपाना पड़ता है। जब ख्याल मजबूत हो जाएगा तो आसपास में साधन अपने आप प्रगट होने लग जाएंगे। कहीं आप चले जाओगे व कहीं किसी के द्वारा चीज स्वंय आपके पास आ जाएगी। वह ख्याल जब ज्यादा बढ़ने लग जाता है तो नूर में प्रगट होने लग जाता है। नानक साहब कहते हैं कि सब जग उपजया नूर से। क्योंकि वति जुड़ती है। जब तक वति बिखरी थी तो अन्धकार था व जुड़ते ही प्रकाश पैदा हो गया। इसलिए ख्याल बनाना पड़ता है व ख्याल बनेगा अपने इष्ट के प्रेम से। हम तो बाहर की चीजों में लगे रहते हैं। इनमें क्या होता है? जैसे मैं एक बार इनसे, एक बार उससे व एक बार उससे (तीन अलग-२ व्यक्तियों से) प्रेम करता हूँ तो एक बार इनकी फिर उनकी व फिर आपकी तस्वीर खड़ी हो जाती है। वो रूप रूकता नहीं। कोई भी रूप काम नहीं करता। एक चीज को जकड़कर पकड़कर रहना पड़ेगा उसी के ख्याल को बार-बार पकाना पड़ेगा। तब आपको अपने गुरू के दर्शन होने लग जायेंगे। यदि आप गुरू के पास भी जाते हो, देवी-देवताओं , पूजा-पाठ को भी मानते हो तो दुनियावी काम सारे बन जाएंगे लेकिन प्रकाश नहीं आएगा चाहे आप सारी जिन्दगी लगे रहना। वह रूप जब बार-बार खड़ा होता है तो ख्याल में प्रगट होने लग जाता है। प्रगट होते ही उस रूप के साथ ओर प्रेम बढ़ जाता है कि मुझे मेरे इष्ट के दर्शन होने लग गए हैं। इसी दर्शन से पता नहीं कितने काम बन जाते हैं, फिर वह ख्याल बढ़ता-बढ़ता अन्तर में प्रकाश रूप में खिलने लग जाता है जैसे कमल का फूल खिलता है, सुदर्शन चक्र चलता है, सर्प का मूंड फैलता और सिकुड़ता है, इस तरह खिलने लग जाता है। वह प्रकाश शुरू में काला, गेरूआ,

बादलों जैसा होता है क्योंकि अन्धकार से निकलकर आए हैं। अन्धकार में जब थोड़ी सी पीली फटने लगती है तो फिर उसका पता चलता है। घूमता हुआ चक्र प्रगट होने लग जाता है। अगर प्रेम नहीं है तो फिर बंद हो जाता है। प्रेम है तो उसे खींचकर, फाड़कर रख दोगे क्योंकि प्रेम से वति बंधती है। विचार से बिखरती है। प्रेम बहुत ऊँची शक्ति है। प्रेम से वह बढ़ता जाएगा।

उसको पतंजली मुनि ने 'धर्ममेघ समाधि' कहा है। स्वामी विवेकानन्द ने उसको 'क्लाउड आफ वरच्चू' कहा है। गुणों का बादल कहा है। पतंजली मुनि ने धर्ममेघ' अर्थात बादल का धर्म कहा है। उन्होंने ऐसे ध्यान को सबसे ऊंचा बताया है कि धर्ममेघ समाधि लग जाती है। लेकिन इसका खिलना तो अभी बाकी है। अभी तो इसका रंग काला-पीला है। ज्यों-ज्यों सतगुरू प्रेम बढ़ता जाएगा, प्रकाश बढ़ता जाएगा और साफ होता जाएगा। इसमें दिन-रात भी आते हैं। क्योंकि जब तक हम काल और स्थान, 'टाइम एण्ड स्पेस' के बंधन में हैं तब तक प्रकाश और अंधकार का सामना करना पड़ेगा। काल, स्थान और वस्तु ये तीन चीजें होती हैं, टाईम, स्पेस एण्ड आब्जेक्ट । जब ये तीन चीजें शुरू होती हैं वहां से सुख -दुःख शुरू हो जाता है। संघर्ष आरम्भ हो जाता है। एकता में दुःख नहीं होता। गहरी नींद में क्या अपको दुःख होता है? जागते हैं तो सुख-दुःख होता है। कभी ख्याल से इस जगह से उठकर उस जगह चले जाते हो और कभी उस जगह से उठकर इस जगह चले आते हो। इससे वति में बिखराव आता है। इसलिए हमें एक जगह पर आकर टिकना पड़ेगा। जो हम अलग-अलग जगह बंटे हुए हैं, अलग-अलग चीजों को मानते हैं और कर्मकाण्ड में फंसे हुए हैं। अगर दुःख से बाहर निकलना है तो यहां आकर(शिव नेत्र पर) ठहरना पड़ेगा। यज्ञ आदि से हमारे टेम्परेरी इलाज हो जाते हैं। इस तरह सारा जीवन लगे रहेंगे, पक्का इलाज नहीं आएगा। अतः दुःख तब शुरू हुआ जब ये चीजें शुरू हुई और ये चीजें तब शुरू हुई

जब दो का भाव (द्वैतवाद) या ख्याल आना शुरू हुआ। जब दो का संघर्ष या मेल शुरू होता है तो दुःख सुख शुरू होता है। गहरी नींद में चले जाते हैं फिर दो का भाव नहीं रहता है। न मन का भाव रहता है न इन्द्रियों का। स्वप्न में क्या होता है? स्थूल इन्द्रियों से हटकर सूक्ष्म इन्द्रियों में चले जाते हैं। सूक्ष्म मन में चले जाते हैं। घर बैठे-२ न जाने कहां-कहां की यात्रा कर आते हैं। लेकिन स्वप्न से आगे गहरी निद्रा में जाते हैं, पूर्ति गहरी निद्रा में जाने के बाद ही होती है। यदि एक रात के लिए भी गहरी निद्रा में नहीं जाते हैं तो सारा दिन परेशानी रहती है। एकता में जाना पड़ता है। गहरी निद्रा अंधकार की एकता है। बगैर एकता में गए हमारी उर्जा वापिस नहीं आती है ताजगी नहीं मिलती है, काम करने की ताकत वापिस नहीं मिलती है। सारा दिन काम करते हैं, थकान हो जाती है। जो ताकत काम करने में खर्च होती है, उसको वापिस लाने के लिए भण्डार में जाना पड़ता है। शास्त्र कहते हैं कि सष्टि का भी यही हाल होता है। आईनस्टाईन भी यही कहता है कि जो शक्ति जमा है, उपलब्ध (अवेलेबल एनर्जी) है, जब वह जमा ताकत खर्च हो जाती है जैसे यह जमीन है और जब इसकी सारी ताकत खर्च हो जाती है तो वह उपलब्ध नहीं रहती,वह अनुपलब्ध ताकत (अनअवेलेबल एनर्जी) में बदल जाती है अर्थात् इसे फिर प्रयोग में नहीं लाया जा सकता है। जिस प्रकार तेल या पैट्रोल की शक्ति जब खर्च हो जाती है तो वह धुंए में बदल जाती है। अब हम धुएं को उसी प्रयोग में नहीं ला सकते हैं। तेल या पैट्रोल की जो जमा शक्ति थी वह खर्च हो चुकी है। जिसे हम पहले ले सकते थे अब वह मिल नहीं रही है। आईनस्टाईन कहता है कि जब सारी शक्ति खर्च हो जाएगी, सूर्य के अन्दर लगातार इंधन जल रहा है, हाइड्रोजन जल रही है। वे कहते हैं कि यह शक्ति लगातार जलते-२ एक समय समाप्त हो जाएगी तो प्रलय का समय आ जाएगा अर्थात् जब हमारी शक्ति दिन में काम करते-२ थक जाती है तो उसमें ताजगी लाने के लिए हमें अंधकार में जाकर डूबना पड़ता है। ऋगवेद

कहता है कि सारी सष्टि का जन्म इसी अन्धकार से हुआ है। महा अन्धकार में जाने के बाद अनुपलब्ध उर्जा उपलब्ध उर्जा में बदल जाती है। उसके बाद फिर सष्टि का आरम्भ होता है जिस प्रकार हम गहरी निद्रा के महा अंधकार में जाकर फिर ताजगी लेकर लौटते हैं। आईनस्टाईन कहता है कि जब सारे ब्रह्माण्ड की उर्जा खत्म हो जाएगी तो प्रलय आ जाएगी। इसे 'एनट्रोपी का सिद्धान्त' कहा जाता है। यही ऋगवेद कहता है। अतः उस जगह पर हमें जाना पड़ेगा। चाहे ध्यान से जाओ, भजन से जाओ। यदि ध्यान-भजन से जाते हो तो महा अंधकार (सुषुप्ति) से आगे प्रकाश का मार्ग है और ऐसे भण्डार में जाकर मिल जाते हैं जहां से सारी चीजें प्रगट होती हैं। बैठे-बैठे सारी चीजें प्रगट होने लग जाती हैं। सूर्य की तरह स्रोत बन जाते हैं। यदि सूर्य को भी कहीं जाने की जरूरत पड़ जाती है तो धिक्कार है उस सूर्य को। वह अपने मार्ग पर दढ़ रहता है। उसे कहीं जाने की और भीख मांगने की जरूरत नहीं रह जाती है।

वह भण्डार की ताकत कब खुलेगी? उसके लिए एकता में जाना होगा। बिखरी हुई ताकत को मिलाना पड़ेगा। दुःख से सुख में जाना पड़ेगा, अधंकार से प्रकाश में जाना पड़ेगा। वैज्ञानिक अन्दर के प्रकाश को मापते हैं। वे भीतर के प्रकाश को नापते हैं कि इस आदमी में से कितना प्रकाश निकलता है। उसको दिमाग की ई.ई.जी. बोलते हैं। जब उसको जाग्रत में नापते हैं तो उसका उतार-चढ़ाव बहुत ज्यादा होता है। एक बार पूरी ऊपर चढ़ जाती है फिर नीचे उतर जाती है। फिर जब स्वप्न में जाते हैं तो उसमें थोड़ी सी शान्ति आ जाती है, इतना उतार-चढ़ाव नहीं रहता। जब गहरी निंद्रा में जाते हैं तो वह एक लाइन की तरह से बन जाती है। उसमें उतार-चढ़ाव, ज्यादा चंचलपना नहीं रहता। जब आपके पास ध्यान के द्वारा गहरी निद्रा वाली शांति आ जाएगी तो आपकी अधिक हलचल मिट जाएगी, उतार-चढ़ाव मिट जाएंगे। आप भण्डार के निकट चले जाएंगे। आपके अन्दर ताकत का भण्डार खुल जाएगा। आपकी इच्छाओं की

बैठे-बैठे पूर्ति होने लग जाएगी। आपको कामधेनु गाय मिल जाएगी। यही गुरू वशिष्ठ की कामधेनु गाय थी जिसको विश्वामित्र छीन नहीं पाए। यही स्वर्ग का कल्प वक्ष है। ये छीनने की वस्तु ही नहीं है, ये तो एक विद्या है। लेकिन यह विद्या या शांति उस प्रकाश की धार से आती है जिसकी वेव लैंथ जीरो हो गई है या अनंत हो गई है, सीधी रेखा में बदल गई है और जो मत्यु की सूचना भी देती है लेकिन ताजगी का भण्डार भी है। उतार-चढ़ाव में तो अन्नत या जीरो नहीं होती, वह सीधी लाइन में अनंत या जीरो हो जाएगी। वह होती है गहरी निद्रा से आगे तुरीयावस्था में जाकर, महाएकता में जाकर। वहां से आप ताजगी खींचकर ला सकते हैं, नहीं तो ताजगी लाने का कोई साधन नहीं है। वैज्ञानिक इसे यन्त्र से मापते हैं। ब्रह्मकुमारी मत वालों ने जब दादी जी का कर्व देखा तो उसमें कोई परिर्वतन नहीं पाया। वे जब हंस रही हैं तब भी वह धार यों की त्यों है, सो रही हैं तब भी, पढ़ रही हैं या ध्यान कर रही हैं तब भी। हमें यूं लगता है कि देखो यह व्यक्ति सुख-दुःख में फंसा पड़ा है लेकिन अंदर की वह स्थाई चीज हमेशा बनी रहती है। यदि हम रास्ते पर चलते-चलते एक बार डगमगा भी जाते हैं और अगर अन्दर की वह शांति, वह धार प्राप्त हो गई है तो वह हमें बार-बार वहीं लाकर स्थिर कर देती है। लेकिन अगर यह वस्तु हमारे पास नहीं है और गिर गए हैं तब बचाने वाला कोई रास्ता नहीं है। जब यह वस्तु हमारे अंदर आ जाएगी तब यदि कोई दुःख हमारे ऊपर आ भी जाएगा तो टल जाएगा, थोड़ा बहुत असर करेगा क्योंकि हमें शरीर और दिमाग मिले हुए हैं, इनका अपना तालमेल होता है। चंचल खाना खा लेते हैं तो वह भी असर डालता है। गल्त रेडिएशन का खाना खा लेते हैं तो वह भी अपना काम कर जाता है।

आर्य समाज के एक बड़े सन्त हुए हैं आनंदस्वामी। मैं उनकी एक किताब में पढ़ रहा था तो क्या पाया? उन्होंने लिखा कि मन के विचारों का आदमी के ऊपर कितना असर होता है। वे हरिद्वार में किसी आश्रम

में रहते थे। उनका एक शिष्य था। वह शिष्य ध्यान करता था, प्रकाश में रहता था व बड़ा खुश था। एक दिन वह स्वामी जी के पास आकर रोने लग गया। जब स्वामी जी ने रोने का कारण पूछा तो उसने बताया कि मेरी जो अन्दर की धार थी वह बन्द हो गई है। आपने जो दया की थी वह बन्द हो गई है। वह बड़े तजुर्बेकार साधु थे। जो अभ्यास करता है वह इन बातों को बता सकता है। बुद्धि में रहने वाले के वश की बात नहीं है। जो प्रेम में रहता है वह इन चीजों को बता सकता है। उन्होंने पूछा क्या बात हुई? तूने कल खाना कहां खाया था? उसने जवाब दिया कि कल एक भण्डारा चल रहा था मैंने वहाँ खाना खाया। वह साधु वहां चले गए, व जाकर पूछा कि कल आपने जो भण्डारा किया था उसके पैसे कहां से आए थे? उन्होंने बताया कि एक आदमी आया था जो पैसे देना चाहता था। हमने जब उससे पूछा कि इतने पैसे क्यों देना चाहता है तो उसने बताया कि उसने अपनी लड़की बेच कर कुछ पैसा कमाया है और पाप से मुक्ति के लिए वह दसवां हिस्सा भंण्डारे में दे गया। कल उसी पैसे का भण्डारा बना था। फिर आनन्दस्वामी जी एक दूसरी कहानी ओर सुनाते हैं कि किसी को कैद (सजा) हो गई। कोई सज्जन आदमी था, उससे कोई भारी अपराध हो गया और उसको फांसी की सजा हो गई थी। जब मौत सामने दीखती है तो सारी चीजें सूझने लग जाती हैं। उसने प्रार्थना की कि कोई महात्मा आकर यदि मुझे हररोज कथा सुनाए तो मेरी मुक्ति में मदद मिल जाए। कम से कम अगला जन्म तो सुधर जाए। आनन्दस्वामी बताते हैं कि मैं उसके पास जाने लग गया। वह आदमी एक दिन कहने लगा कि मुझे बार-बार एक स्वप्न आता है कि जैसे मैं अपनी माँ को पीट रहा हूं, मेरी माँ को बाल पकड़कर व घसीटकर बाहर आंगन में ले जाता हूँ और उसको मारता हूं फिर मेरी आंख खुल जाती हैं। मैं बहुत उदास हो जाता हूं। रोने लग जाता हूं। इस स्वप्न ने मुझे बहुत दुःखी कर दिया है। स्वामी जी ने जहां उनका खाना बनता था वहां जाकर पता लगाया कि खाना कौन कौन

आदमी बनाता है व उनके क्या-क्या जुर्म हैं? उन्होंने पूछा कि क्या तीन चार दिन से यहां कोई नया कैदी आया है? पता चला कि एक आदमी नया आया है जिसने अपनी मां की हत्या की है। उसने बाल पकड़कर, घसीटकर उसे मारा है। देखो, विचारों का खेल कहाँ जाकर होता है। खाना बनाने वाले का असर कहां आ जाता है। मेरी माताओं ! तुम्हारे हाथ में बहुत कुछ है। अगर सच्चे और शुद्ध विचारों से खाना बनाओगी तो वो फलेगा। आपके पड़ोस में भी कोई अशान्त व्यक्ति आ जाएगा तो उसे भी अपने आप शान्ति मिलने लग जाएगी। मैं उस अध्यात्म को नहीं मानता कि आपको कुछ बोलने या बताने की जरूरत पड़े। अगर आस पास के आदमियों को वैसे ही शान्ति मिलने लग जाती है तो वह अध्यात्म है नहीं तो नहीं है। आपकी मौजूदगी या आपकी रेडिएशन मात्र से ही कार्य होने लगता है। महात्मा बुद्ध भी कहते हैं कि विचार शुद्ध करो, पवित्र विचारों के बिना रास्ता नहीं है। अगर किसी आदमी के प्रति स्वप्न में भी आपने गल्त विचार सोच लिया है तो वह आपका कर्म बन जाएगा। स्वामी विवेकानन्द भी यही कहते हैं कि यदि हम बुरा सोचते हैं तो पहले तो हम खुद बुरे होते हैं क्योंकि बुराई के साथ खुद बुरे होकर ही मेल हो सकता है। इसी तरह अच्छाई के साथ मेल के लिए अन्तर का अच्छा होना जरूरी है। सुबह सत्संग में चित्रकार का उदाहरण दिया था कि चित्रकार पहले अन्दर में विचार से कोई तस्वीर बना लेता है। पहले अपने मन में उसे सुन्दर बनाता है फिर उसको बाहर खींचता हैं, फिर बाहर वाले चित्र को देखकर अपने मन के अन्दर उसे और सुन्दर बनाता है। उसका मन भी सुन्दर बनता चला जाता है वह पहले अपना भला करता है फिर आपका भला करता है। सुन्दर चित्र को देखकर आप भी आनंदित हो उठते हैं। अगर हम बुरा सोचेंगे, मन से बुरी धार निकालेंगे तो पहले खुद का नुकसान करेंगे। अन्दर में बीज डाल रहे हैं, पहले खुद को फूकेंगे। जिस वक्त बीज को उचित वातावरण मिल गया, हवा, पानी मिल गया, तो कहां जमेगा वह

बीज़? वह दूसरे के अन्दर नहीं, हमारे अन्दर जमेगा और हमें सबसे पहले नुकसान करेगा। हमारे मन व सोच को बदसुरत बनाएगा।

स्वामी विवेकानन्द कहते हैं कि हमें समाज में रहते हुए बुरा सोचने का अधिकार नहीं है। हम अकेले नहीं हैं। हमारे साथ समाज के बहुत आदमी जुड़े हुए हैं। एक धार प्यार की छोड़ते हो तो उसे पकड़ने वाले दिल होते हैं, रिसीवर होते हैं। यदि वह प्यार की धार छोटी भी है तो वह बड़ी बनकर लौटकर हमारे पास आएगी। अगर नफरत की तरंग छोड़ी है तो बड़ी भारी नफरत की तरंग बनकर हमारे पास लौटेगी। क्योंकि ऐसे-ऐसे आदमी हैं जिनके अन्दर नफरत का भण्डार भरा पड़ा है, उनके अन्दर से होकर आएगी तो सोचो कितनी ताकत लेकर हमारे पास लौटेगी। इस प्रभाव से कोई बच ही नहीं सकता। क्योंकि कोई भी उर्जा है उसमें गति अवश्य होती है, पथ्वी की गति है, सूरज की गति है, किसी भी चीज की गति जहां से शुरू होती है वहीं आकर खत्म होती है। उस चीज का एक पक्का घेरा होता है। ये एक नियम है। फिर स्वामी विवेकानन्द कहते हैं कि हम जिस कमरे में बैठे हैं इसमें जितने अणु हैं, जितने भी हवा के कण बिखरे पड़े हैं, कोई इधर भाग रहा है, कोई उधर भाग रहा है। अगर इन कणों को एक दिशा में मोड़ दिया जाए और उस ताकत को प्रयोग किया जाए तो इस कमरे में प्रकाश खिल जाएगा। ये है बिखरी हुई वति का बांधना। जब कमरे के अन्दर प्रकाश हो सकता है तो हमारे अन्दर क्यों नहीं होगा? लेकिन विचारों का खेल इसमें बहुत ज्यादा होता है। मेरे दाता, शहनशाह, बादशाह एक मिसाल देते थे; एक दण्डेस्वामी महात्मा था। वह गांव में आता था तो ब्राह्मणों के घर भोजन करता था। किसी दूसरे के घर नहीं करता था और महाराज जी का ऐसा भाव था कि कोई महात्मा गांव में आता तो उसे भोजन खिलाने की इच्छा होती थी। उनसे पूछा कि मैं आपको भोजन करवाना चाहता हूँ तो महात्मा ने कहा कि मैं शुद्र का भोजन नहीं करता। मैं तेरे घर का अन्न नहीं खाता, मैं तो ब्राह्मणों के घर का खाता हूँ।

महाराज जी कहने लगे कि मैं पण्डितों के घर बनवा दूंगा। हमारे पास में दादी रहती है। महाराज जी की ऐसी हालत थी कि लाई (मजदूरी) पर कुछ कमा लेते थे। किसी के चने काटकर जितना हिस्सा मिल गया ले आए या सिल्ला चुग लिया (खेतों में जो गिरी हुई टाट बच जाती है उसे चुग लेते)। कणाद ऋषि ऐसे ही करते थे। महाराज जी ने जो चने इकट्ठे किए हुए थे उनको बेचकर गेहूँ बदलवाए। नमक, मिर्च और दाल ले ली और पण्डिताइन के घर खाना बनवा दिया। फिर वो खाना उस महात्मा को खिलाया और महात्मा ने जो बाद में रोटी का एक छोटा टुकड़ा छोड़ा उसे महाराज जी ने प्रसाद रूप में खा लिया। मेरे दाता कहते थे कि खाने का अपमान नहीं करना चाहिए। शास्त्रों में खाने को अन्नमय पुरूष कहा गया है। अन्नमय पुरूष, प्राणमय पुरूष, मनोमय पुरूष, विज्ञानमय पुरूष और आनन्दमय पुरूष ये परमात्मा की, आत्मा की पांच डिग्री बताई गई है। इसलिए अन्न का अनादर नहीं करना चाहिए। उनका भाव था वे अन्न को खराब नहीं जाने दिया करते थे, उन्होंने जो बचा था उसे खा लिया। उस महात्मा दण्डेस्वामी ने सुबह -२ महाराज जी को बुला भेजा। कहने लगे - कैसा खाना खिलाया था? महाराज जी कहते थे कि मेरी पिण्डी कांपने लग गई कि क्या बात हो गई? अगर महात्मा नाराज हो गया तो अच्छी बात नहीं है। उनका ऐसा भाव था। महाराज जी ने पूछा कि क्या मुझसे कोई गल्ती हो गई? उन्होंने उत्तर दिया कि मेरा आज वो ध्यान बना है जो जिन्दगी मैं आज से पहले कभी नहीं बना था। तू खाना किस तरह से लाया था? महाराज जी ने बताया कि मैंने तो खेतों से दाने चुगे थे और उनको इस तरह बदलवाकर खाना बनवा कर लाया था। वह सिर पर हाथ मारकर रोया कि अगर मैं तेरे चनों का खाना खा लेता तो पता नहीं मैं क्या हो जाता। बड़ी तकड़ी शुद्ध मेहनत की कमाई थी। अगर हम इन बातों पर चलने लग जाएं तो सारी रिश्वतखोरी, दहेज आदि बुराईयां खत्म हो जाएंगी। आप इस रास्ते पर चलकर तो देखो। आपको ये पता

चल जाएगा कि पाप की कमाई अन्दर से जहर बनकर निकलेगी। और निकलती भी है कोई रोक नहीं सकता। हम अपनी औलाद के खुद दुश्मन होते हैं। गल्त खाना खिलाएंगे तो औलाद में से निकलेगा। ''जैसा खाए अन्न वैसा हो जाए मन''। ''जैसा पीए पानी वैसी बोले वाणी।'' उसी तरह के संस्कार अन्दर में आ जाते हैं। संस्कार अन्दर में आ जाते हैं तो वही फिर औलाद में बीज बनकर चले जाते हैं। जैसा बीज अन्दर में होगा वैसा ही बाहर निकलेगा। साईस तो ये कहती है कि हर आदमी के चारों तरफ एक चुम्बकीय घेरा होता है वह किसी आदमी में गुणात्मक रूप से ज्यादा होता है किसी में कम। साधु में वह अलग तरह का होता है। मजबूत होता है। वह जो प्रकाश आता है वह अन्तर में सुदर्शन चक्र की तरह घूमता है। घेरा बन जाता है। अगर कहीं से बुरी धार चल कर आती है तो वह उसे अन्दर घुसने नहीं देता, वापिस भेज देता है। जिसने भेजी है उसको चोट आ सकती है। इस तरह से इन बातों का ख्याल रखने से हम अन्दर में प्रकाश में चले जाते हैं।

प्रकाश ही सब कुछ नहीं है। यहां तक तो सुख दुःख का खेल है। यह तो छटे चक्र तक का खेल है। राधास्वामी मत अठारह चक्र बताता है। छः स्थूल के हैं, छः सूक्ष्म के और छः ही कारण के हैं। ये तो सभी शास्त्र मानते हैं कि स्थूल, सूक्ष्म और कारण तीन चीजें होती हैं। आत्मा के तीन शरीर होते हैं। स्थूल के छः चक्र को विज्ञान भी मानता है क्योंकि ये दिखाई देते हैं। सूक्ष्म के दिखाई नहीं देते इसलिए नहीं मानते। गुदा चक्र, इन्द्री, नाभि, हदय, कण्ठ और ये आज्ञा चक्र (आँखों के बीच में) शरीर के छः स्थूल चक्र हैं। आज्ञा चक्र से नरवस सिसटम चलता है। कण्ठ से रेसपीरेटरी सिसटम चलता है, हदय से ब्लड सिसटम चलता है। नाभि से डाइजेसटिव सिसटम चलता है। इस प्रकार इन छः चक्रों से शरीर की छः प्रणालियां कार्य करती हैं। सबसे ऊँचा, सबसे अधिक ताकत वाला नरवस सिस्टम सबसे ऊपर सिर में होता है। अगर इस सिस्टम के अन्दर कोई

गड़बड़ हो गई है, दिमाग में कोई गड़बड़ मच गई है तो सारे सिसटम प्रभावित हो जाएंगे। इसका शरीर पर सबसे ज्यादा असर पड़ेगा। यानि जो चेतना है वह बढ़ती चली गई, ऊपर की तरफ सूक्ष्मता बढ़ती चली गई। नीचे के चक्रों में यह अधिक स्थूल होती चली गई। स्थूल के छह चक्र सबने मान लिए। फिर कहते हैं कि सातवां सहस्रार होता है। वहां काम पूरा हो जाता है, मुक्ति मिल जाती है। सहस्रार आज्ञा चक्र के ऊपर सातवां चक्र है। यहां से कबीर मत का आरम्भ होता है। यहां से नानक योग शुरू होता है। यहीं से राधास्वामी योग शुरू होता है। आंखों तक छः चक्र पूरे हो जाते हैं, राधास्वामी मत कहता है कि छः चक्र सूक्ष्म भी होते हैं। जब स्थूल शरीर है तो उसको पैदा करने वाली सूक्ष्म ताकत भी होती है और सूक्ष्म शरीर को पैदा करने वाली कारण ताकत (आत्मा) भी होती है। इस प्रकार तीनों शरीरों के छह-छह मण्डल या चक्र होते हैं और इस तरह से अठाहरह मण्डल बनते हैं। लेकिन हम तो प्रकाश में गए और कह दिया कि हमारी तो समाधि लग गई। मुक्ति हो गई इससे बात नहीं बनती। सुख दुःख का घेरा पूरा हो जाता है। यहां से मुक्ति का रास्ता खुलता है। जब तक प्रकाश और अन्धकार के मण्डलों का पसारा है तब तक हम काल और माया के घेरे में हैं। षट्दर्शन या अन्य किसी भी मत में ले लो, ये कहते हैं कि जब अन्तर में प्रकाश पैदा होता है तो हमारे अन्दर जो वासनाएं हैं वे जलने लग जाती हैं। जो बीज हैं वो उग जाते हैं, प्रगट हो जाते हैं, सामने आ जाते हैं। जब वह आग जलकर (प्रकाश बनकर) बुझ गई तो ये कह देते हैं कि हमारे सारे जो कर्मो के बीज थे वे जल गए, उनकी राख हो गई, इसलिए अन्धेरा आ जाता है। उसको असम्प्रज्ञात समाधि, निर्विकल्प समाधि कहा जाता है। ये तो कुछ भी नहीं है। जब तक प्रकाश और अन्धकार के मण्डल आएंगे, घेरे आते जाएंगे, तब तक ब्रह्माण्ड की सीमा है। तब तक काल और माया की सीमा है। जब ध्यान करते-२ उन मण्डलों की सारी दिवारों को भेद दोगे, छेद दोगे और सारे मण्डलों की दिवार आपस में मिल जाएंगी तब जाकर आपका शरीर चुम्बक बनेगा। प्रकाश की

धारा लगातार बहने लग जाएगी। अन्धकार में आंख खोले-२ देखोगे तो आपको प्रकाश बहता हुआ नजर आएगा। आपका शरीर प्रकाश की बैटरी बन जाएगा। अब कबीर साहब कहते हैं :

'कर नैनों दीदार महल में प्यारा है।'
पलक झपकने की देरी है
सुभान कुदरत तेरी है।

बस पलक झपकने की देरी होती है। वो चीज हाजिर रहती है। यह होता है सुमरिन का पक्का होना। आगे कबीर क्या कहते हैंः

माला फेरूं ना हर भजूं, मुख से कहूं ना राम।
मेरा सांई मुझको भजे, तब पाऊँ विश्राम।।

ये है उस मालिक का हाजिर होना, प्रगट होना। अब वह आपको भजने लग जाता है। ये अन्धकार के तीन मण्डल ब्रह्माण्ड में आते हैं। मैं छटे चक्र से ऊपर की बातें बता रहा हूँ। सहस्रार से ऊपर की। प्रकाश का मण्डल आता है, उसे धुन का मण्डल भी बोलते हैं। आगे अन्धकार का मण्डल आता है उसको शब्द का मण्डल बोलते हैं। उसको लय मण्डल भी कहते हैं। उसको रात्रि भी कहा जाता है। स्वामी जी महाराज ने साफ लिखा है कि शब्द के मण्डल से सुरत का मण्डल पैदा हुआ है। सुरत के मण्डल से शब्द का मण्डल पैदा हुआ है। फिर उससे, उसके नीचे सुरत का मण्डल पैदा हुआ है। एक बार धुन पैदा हो गई, दूसरी बार उस धुन में से निकलने वाला शब्द पैदा हो गया। शब्द की आवाज बगैर धुन की होती है। जो सिर के मध्य में बोलता है लेकिन उसमें धुन नहीं होती है। धुन ऐसे होती है कि जैसे यहां पर कोई बाजा बज रहा है, बगैर धुन का, बगैर उतार-चढ़ाव का, एक गति से जैसे पीं-ई-ई, इसको ले लो। लेकिन जब हम दूर से आते हैं तो हवा के उतार चढ़ाव से, हवा के बीच में आने की वजह से या दूई के कारण उसमें उतार-चढ़ाव पैदा हो जाता है। वह आवाज धुन बन जाती है। कभी ज्यादा सुनती है कभी कम सुनती है। संतों ने धुनों के मण्डलों के नाम दिए हैं, शब्दों के मण्डलों के नाम नहीं

दिए। शब्दों से पहचान नहीं होती ।

पांच शब्द धुनकारें,

धुन बाजे शब्द निशान।

शब्द के निशान के तोर पर धुन बजती है। जो मण्डलों के नाम बताए गए हैं - ज्योत निरंजन, ओंकार, रारंग, सोहंग, सतनाम, अलख, अगम, अनामी। एक अनामी को छोड़कर सारे धुन के मण्डल हैं। धुन से मण्डलों की पहचान होती है। लेकिन ये धुन भी शब्द से निकलती है। जैसे-दूर से सुनते हो तो उसमें उतार चढ़ाव था, वही चीज धुन बनी हुई थी लेकिन यहां आकर आपकी दूई मिट गई, आपको असलियत का पता चल गया कि धुन तो नहीं है ये तो मध्य में एक ताकत थी जिसकी आवाज मण्डल के बीच से उठ रही थी। पहले धुन के मण्डल में जब जाओगे तो उतार-चढ़ाव, बहुत भारी प्रकाश खिलने लग जाएगा, धुन पैदा हो जाएगी। जैसे जैसे स्रोत के नजदीक आते जाओगे वह धुन लीन होने लग जाएगी, लय अवस्था आने लग जाएगी। धुन का आदि शब्द आने लग जाएगा, धुन खत्म होने लग जाएगी, बीच बीच में शब्द प्रकट होने लग जायेगा। प्रकाश भी कम होने लग जाएगा। प्रकाश निखर कर सफेदी पर आकर धीरे-धीरे खत्म होने लग जाएगा। जैसे आप किसी को मिलने के लिए दूर से आ रहे हो। किसी से मिलना है तो मिलने की एक तड़फ होती है कि ये बात करनी है वो करनी है। आपके अन्दर एक खिंचाव होता है। कभी उतार आता है कभी चढ़ाव आता है लेकिन यहां आने के बाद आप बैठते हैं, बातें करते हैं तो शान्ति पड़ जाती है और सारा खिंचाव समाप्त हो जाता है। जब आप खिंचाव में थे, वह धुन का मण्डल था। यहां आकर शान्ति में आ गए तो शब्द का मण्डल लेकिन अन्धकार का मण्डल है। यह अंधकार का मण्डल ऐसी खतरनाक खाई है कि इसमें से निकल पाना आसान नहीं है।

श्री अरविंद ने इन्हें रात्रि (नाईट) और अनंत रात्रि (इटर्नल नाईट) कहकर पुकारा है। इस तरह से शब्द से सुरत और सुरत से शब्द के

मण्डल पैदा होते हैं। यही स्वामी जी महाराज व हुजूर महाराज भी कहते हैं। जो सहस्रार से शुरू होते हैं वे पांच शब्द धुनकार हैं, दस कहो लेकिन हम तो नीचे के दस शब्दों को मान लेते हैं जो यहां बीच में होते हैं, आज्ञा चक्र के ऊपर और सहस्रार के नीचे। इस स्थान को अण्ड कहा जाता हैं। यह सारे ब्रह्माण्ड का अण्डा होता है। ब्रह्माण्ड और सच्चखण्ड का अण्डा होता है। वहां पर सारी ताकतें बीज या छाया रूप में मौजूद रहती हैं। अण्डा तो किसी चीज का बीज होता है। दस के दस शब्द यहां भी आते हैं। सावण सिंह जी महाराज ने भी ये परमार्थी पत्र में लिखा है। हुजूर महाराज ने प्रेम पत्र में लिखा है। हम इन शब्दों में उलझकर इसे ही सही मान लेते हैं। घूं-घूं, भंवरे की पीं-पीं, स्कूल की घंटी की आवाज, शिव के डमरू जैसी आवाज, ताल, शंख, बादल की घनघोर, नफीरी व सिंह की गर्जन आदि। ये यहां के (अण्ड के) दस शब्द हैं। ये ऊपर वाले शब्दों की छाया हैं। जब सही स्थान का शब्द आयेगा तो चेतना को ऊपर की तरफ खीचंना शुरू कर देगा और जब आखिरी शब्द में जाओगे तो आंखों की चेतना इतनी अधिक खिंच जाएगी कि पुतलियां ऊपर चढ़ जाएंगी। आंखें अंदर धंस जायेंगी। इसको जीते जी मरना कहते हैं। जीभ फटने को हो जाएगी, अन्दर जाकर हलक में लग जाएगी। लेकिन कोई कोई आदमी जब मरता है तो उसकी जीभ बाहर निकलती है, जैसे पशुओं की निकलती है। या उनकी निकलती है जिसकी आत्मा जीभ पर वास करती है। जिस इन्द्री में जिसका प्रेम होता है, उस इन्द्री में से मरते समय जान निकलती है, सुरत निकलती है। आपको एक उदाहरण सुनाता हूं - किसी गांव में एक बुजुर्ग था जब उसका आखिरी समय आया तो वह मेज से लड्डू उठाकर खाने लग गया, वहां लड्डू नहीं थे और वह पास बैठे बेटे-पोतों को कहने लगा कि तुम भी मेज से उठा कर लड्डू खा लो। कहने लगा कि देखो तुम्हारी दादी कितने लड्डू लाई है। थोड़ी देर बाद वह मेज पर हाथ लगा-लगाकर चाटने लगा और कहने लगा कि देखो कितनी स्वाद चटनी है। जब उसकी मौत हुई तो उसकी जीभ बाहर

निकली हुई थी। जीभ का स्वाद था इसलिये सुरत जीभ में से निकली।

जिस इन्द्री में हमारा वासा होगा, जिस इन्द्री को हम जीवनभर जिएंगे उस इन्द्री में से सुरत निकलती है। ऐसा शास्त्र भी कहते हैं। जब आप उस ध्यान में जाओगे तो आपकी आंखें फटकर ऊपर चढ़ जाएंगी, बंद होने लग जाएंगी। क्या आप खुली रख सकोगे? नहीं। जीभ अन्दर की तरफ खिंच जाएगी। चेतना चक्कर काट-काटकर, भवंर बनाकर ऊपर चढ़ने लग जाएगी, शरीर में कपड़े को निचोड़ने जैसा अनुभव होता है। क्योंकि शक्ति चलती है तो घेरा बनाकर चलती है। कोई ऐसी शक्ति या एनर्जी नहीं जो घेरे के बगैर चलती है। ब्रह्माण्ड तक शब्द के मण्डल अन्धकार के मण्डल होते हैं। उससे आगे सच्चखण्ड में धुन के मण्डल भी और शब्द के मण्डल भी प्रकाश के मण्डल होते हैं लेकिन धुन के मण्डलों में प्रकाश बहुत अधिक होता है। सही काम तब बनता है जब आप स्थायी तौर पर धुन के मण्डल में ठहर जाते हो। अगम लोक में राधास्वामी धुन होती है। उससे पहले कोई धुन में नहीं रूक सकता क्योंकि सुरत का वही आदि धाम है। उस लोक में जाकर सुरत रूक जाएगी, स्थायी तौर पर धुन आ जाएगी। इससे ऊपर यदि अनामी धाम में जाते हो, शब्द के मण्डल में जाते हो तो वहां मौत होती है। क्या चल सकते हो वहां से उठकर? पैर उठा सकते हो? आंखें नहीं उतरती वहां से तो। कैसे चलोगे? अनामी धाम में नहीं रूक सकते हैं आप। निचले मण्डल पर आना पड़ेगा। धुन के मण्डल में आना पड़ेगा। वो धुन स्थायी तौर पर अन्दर में मौजूद रहती है। लेकिन इससे पहले कोई भी व्यक्ति धुन के मण्डल में ठहर नहीं सकता है वह शब्द के मण्डल (लय मण्डल) में जाकर ही विश्राम कर सकता है, यह उसके वश की बात नहीं है। केवल आखरी मंजिल पर पहुंचा हुआ व्यक्ति ही धुन के मण्डल में ठहर सकता है। घंटे का शब्द सुनोगे तो घंटे का खत्म होकर अगले मण्डल में जाकर समाना पड़ेगा अर्थात बिना धुन के मण्डल में जाकर लय होना होगा। ओंकार की धुन पैदा होगी तो उससे अगले मण्डल के शब्द में आकर समाना पड़ेगा। अगम लोक से पहले धुन के मण्डल में

आदमी रूक ही नहीं सकता लेकिन बीच के लय मण्डलों में व्यक्ति जन्म-जन्मों तक ठहरा रह सकता है। फंस सकता है। उसमें से एक शब्द भेदी सतगुरू ही निकाल सकता है। उसके सिवा किसी की ताकत नहीं है। दूसरा प्रेम और सुमरिन मदद करते हैं।

ध्यान की कोई चीज भटक गई है, कोई अभ्यास की चीज अटक गई है, अन्धकार आ गया है तो सतगुरू प्रेम और सुमरिन ऐसी दो धारी तलवार है जो पल में किसी भी कठिनाई को धराशाही कर सकती है। सतगुरू प्रेम विरह की अग्नि जलाएगा, आपको अपने इष्ट के प्रेम में रूलाएगा। आपकी सारी ताकत की गाँठ बंध जायेगी। गाँठ बंधते ही प्रकाश खुल जायेगा, अन्धकार का मण्डल पार हो जाएगा, आप कूद मार जाओगे। सतगुरू प्रेम और सुमरिन है तो ध्यान है। ये चीजें हैं तो भजन है नहीं तो एक ही अन्धकार के मण्डल में पड़कर सारी जिन्दगी निकल जाएगी, निकल नहीं पाओगे।

आज से सतगुरू की आज्ञा से यह सत्संग रूपी यज्ञ शुरू किया गया है। यज्ञ कैसा? जिसमें प्रेम, त्याग और ध्यान की आहुति डालनी है। जो भाई बहन ये चीजें दे सकें वे इसमें आहुति डाल सकते हैं। पैसे की आहुति स्वीकार नहीं की जाएगी। पैसे की जरूरत नहीं है। यदि मालिक की मौज है तो सारा काम आप ही बन जाएगा वरना भीड़ इकट्ठी करने की जरूरत भी नहीं है। जो भाई यहां आए हैं, उनसे मेरी यही प्रार्थना है कि ध्यान जरूर पकड़ें। ध्यान के बगैर कोई रास्ता नहीं है। इससे आपके सारे स्थूल काम भी बनने लग जाएंगे। स्वार्थ भी बनने लग जाएगा और परमार्थ भी बन जाएगा। जमींदार जब फसल बोता है तो यह नहीं सोचता कि मैने सौ मण तूड़ी (भूस) लेनी है वह सोचता है कि मैंने सौ मण गेहूँ लेनी है। तूड़ी तो अपने आप आ जाती है। स्वार्थ तो इस रास्ते में अपने आप बन जाता है। परमार्थ की तरफ चलो, स्वार्थ अपने आप बन जाएगा।

राधास्वामी।

विनती

करूं विनती दोउ कर जोरी,
अर्ज सुनो राधास्वामी मोरी।
सतपुरूष तुम सतगुरू दाता,
सब जीवन के पितु और माता।
दयाधार अपना कर लीजे,
काल जाल से न्यारा कीजे।
सतयुग त्रेता द्वापर बीता,
काहु न जानी शब्द की रीता।
कलयुग में स्वामी दया विचारी
परगट करके शब्द पुकारी।
जीव काज स्वामी जग में आए,
भौसागर से पार लगाए।
तीन छोड़ चौथा पद दीन्हा,
सतनाम सतगुरू गत चीन्हा।
जगमग जोत होत उजियारा,
गगन सोत पर चन्द्र निहारा।
सेत सिंहासन छत्र विराजे,
अनहद शब्द गैब धुन गाजे।
क्षर अक्षर निः अक्षर पारा,
विनती करे जहां दास तुम्हारा।
लोक अलोक पाऊँ सुख धामा,
चरन सरन दीजे विसरामा।
राधास्वामी।

आरती

आरती आगे राधास्वामी के कीजे।
बिमल प्रकाश अर्मी रस पीजे।।
चित्तकर चंदन हित कर माला।
आन चढ़ाऊ स्वामी दीन दयाला।।
गगन का थाल सुरत की बाती।
शब्द की जोत जगे दिन राती।।
सहस कंवल दल घंटा बाजे।
बंकनाल धुन शंख सुनीजे।।
ओंकार धुन त्रिकुटी साजे।
सुन्न शिखर अक्षर धुन गाजे।।
भंवर गुफा ढ़िंग सोहंग बासा।
सतलोक सतनाम निवासा।।
दास आपकी आरती गावें।
चरण कमल में बासा पावें।।

''राधास्वामी''